दिनाक ९/५/८२ को श्री पार्श्वनाथ चूलगिरि अतिशय क्षेत्र जयपुर मे आयोजित पचकल्याणक महोत्सव पर प्रकाशित

⁜ प्रथम सस्करण : ११०० प्रतियां

⁜ मूल्य स्वाध्याय / १५ रुपये

(डाक व्यय अतिरिक्त)

⁜ मुद्रक — मूनलाइट प्रिन्टर्स, जयपुर-३

⁜ ब्लाक निर्माता — जुब्ली ब्लाक वर्क्स, जयपुर

प्राप्ति स्थान :

शान्ति कुमार गगवाल

प्रकाशन सयोजक

श्री दिगम्बर जैन कुन्थु विजय ग्रन्थ माला समिति

कार्यालय — १९३६ घीवालो का रास्ता,

कसेरो की गली, जौहरी बाजार

जयपुर-३०२ ००३ (राजस्थान)

श्री १००८ भगवान पार्श्वनाथ

परम पूज्य समाधि सम्राट् तीर्थभक्त शिरोमणि १०८ परम्पराचार्य
परमेष्ठी श्री महावीर कीर्त्तिजी गुरु महाराज
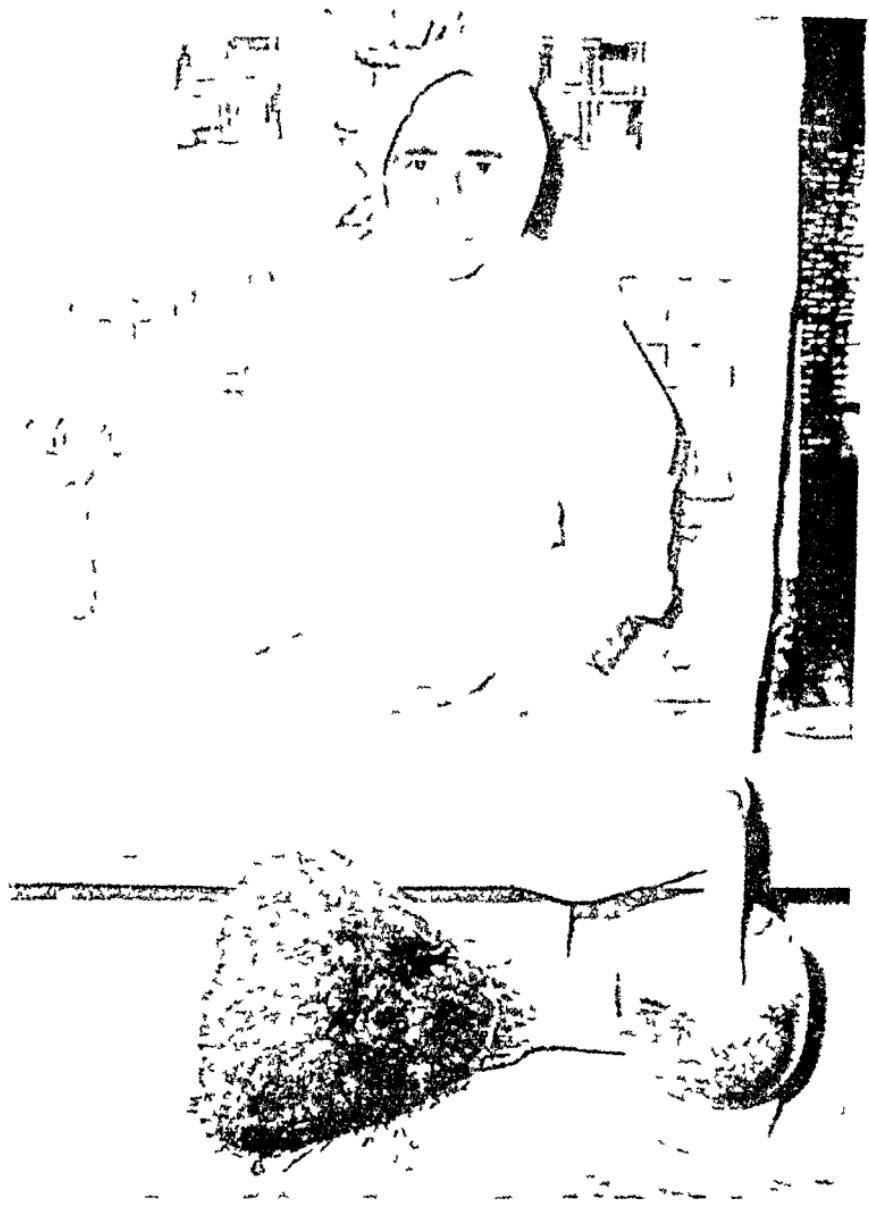
श्री गणिनी १०५ आर्यिका विदुषी रत्न, सम्यकज्ञान शिरोमणि
सिद्धान्त विशारद विजयमति माताजी

शुभाशीर्वाद एवं शुभ कामनाएँ

स्थान—खानियाँ, जयपुर

दिनाक ७-४-८२
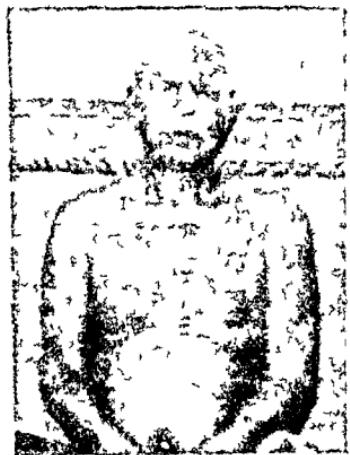
भारत गौरव, विद्यालकार, सम्यक्त्व चूडामणि आचार्यरत्न १०८ श्री देशभूषणजी महाराज का मंगलमय आशीर्वाद।

गणधराचार्य १०८ श्री कुन्थुसागर जी महाराज ने राजस्थान का होते हुए भी कन्नड भापा का अच्छी तरह से अध्ययन करके "श्री चतुर्विशति तीर्थङ्कर अनाहत यत्र मत्र विधि" कन्नड भापा के प्राचीन ग्रंथ का प्रयत्न पूर्वक सशोधन करके अनुवाद किया है। आज के युग मे प्राचीन साहित्य का प्रकाशन होना अत्यन्त आवश्यक है। आपका प्रयास सफल होवे। जन-जन के मन मे इस पुस्तक के प्रति आदर भाव रहे।

इति भद्र भूयात्।   इति आशीर्वाद।

आचार्य श्री १०८ देशभूषण

हरिश्चन्द्र कोलिया
15, नवजीवन उपवन,
मोती डूंगरी रोड, जयपुर-4

स्थान—हुम्मच
दि. ३०. ३. ८२
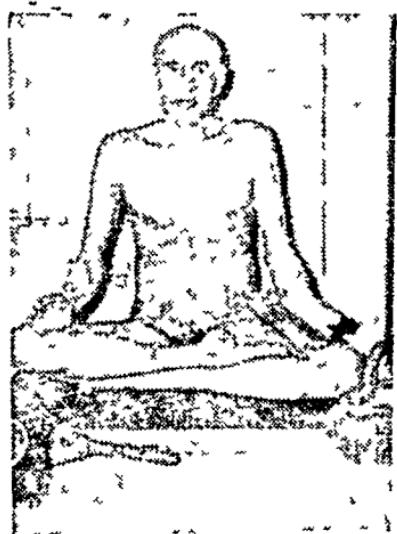
निमित्तज्ञान शिरोमणि श्री १०८
आचार्य विमलसागरजी
महाराज का मंगलमय
शुभाशीर्वाद ।

आपका प्रकाशन अच्छा और साफ है। ग्रन्थमाला समिति द्वारा श्री चतुर्विशति तीर्थकर अनाहत यत्र मत्र विधि पुस्तक का प्रकाशन होने वाला है, उसके लिए पुस्तक के अनुवादकर्त्ता श्री १०८ गणधराचार्य कुन्थु सागर जी महाराज व प्रकाशन सयोजक श्री शान्तिकुमार गगवाल के लिये मेरा भूरि-भूरि शुभाशीर्वाद है। यह पुस्तक भव्यो के लिये कार्यकारी हो, मंगलमय हो, ऐसी मेरी कामना है।

श्री १०८ आचार्य विमलसागर

स्थान—श्री दिगम्बर जैन मन्दिर
धरियावद (उदयपुर)
दि. ११. ४. ८२

परमपूज्य श्री १०८ आचार्यरत्न
श्री धर्मसागर जी महाराज
का मगलमय आशीर्वाद।

बडे हर्ष का विषय है कि आपकी ग्रन्थमाला समिति "लघुविद्यानुवाद ग्रथ" के पश्चात एक और श्री चतुर्विशति तीर्थङ्कर अनाहत यत्र मत्र विधि नामक पुस्तक का प्रकाशन करने जा रही है। कन्नड से राष्ट्रीय हिन्दी भाषा मे अनुवाद होने पर यह पुस्तक (ग्रन्थ) सर्वसाधारण के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

आपको एव समिति के सभी कार्यकर्ताओ को आशीर्वाद देते हुए आशा करता हू कि भविष्य मे भी आर्ष परम्परागत महत्वपूर्ण धार्मिक ग्रन्थो का आप प्रकाशन करते रहेगे।

श्री १०८ आचार्य धर्मसागर

श्री गणिनी १०५ आर्यिका विदुषीरत्न, सम्यग्ज्ञान शिरोमणि सिद्धान्त विशारद विजयमती माताजी का मंगलमय आशीर्वाद।

ग्रन्थमाला समिति द्वारा श्री चतुर्विशति तीर्थ कर अनाहत यत्र मत्र विधि पुस्तक का प्रकाशन करवाया जा रहा है, यह समाचार अवगत हुए। श्री शातिकुमार जी गगवाल को मेरा पूर्ण आशीर्वाद है कि वे अपने प्रकाशन कार्य मे सलग्न रहकर पूण सफलता प्राप्त करे। यह पुस्तक जन कल्याण मैं कार्यकारी सिद्ध हो, यही मेरी भावना है।

श्री गणिनी १०५ आर्यिका विजयमति

स्थान—उदयपुर

परमपूज्य विदुषीरत्न श्री १०५ आर्यिका विशुद्धमति माताजी का मंगलमय आशीर्वाद।

सर्व द्रव्यो मे आत्मद्रव्य अनुपम द्रव्य है, क्योकि यह चैतन्य-मयी है। आत्मा की सर्वोत्कृष्ट उपलब्धि है केवलज्ञान, जिसकी शक्ति प्रत्येक आत्मा मे विद्यमान है। तब जाति स्मरण, अवधि ज्ञान, निमित्तज्ञान एव अनेक ऋद्धि सिद्धि की शक्तियाँ तो आत्मा मे है ही, किन्तु हमे उन पर विश्वास नही है।

जैसे सुरीला ली हुई औषधि हमारी रुग्ण पर्याय का शमन कर निरोग पर्याय को प्रगट कर देती है, वैसे ही यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र आदि के प्रयोग आत्म निहित अनेक शक्तियो को प्रगट करने की क्षमता रखते है। वीणा के तारो पर अगुली के स्पर्श से उठने वाली झकार सदृश विधिपूर्वक साधित यन्त्र मन्त्र आत्मिक शक्तियो को झकृत कर देते है।

यह विद्या एक प्रकार से मृतप्राय हो रही है। परम पूज्य गणधराचार्य १०८ श्री कुथुसागरजी महाराज ने इसे पुन जीवन

प्रदान करने हेतु कदम उठा रहे है, यह अति प्रसन्नता की बात है। आपने श्री चतुर्विंशति तीर्थकर अनाहत यत्र मत्र विधि ग्रन्थ का कन्नड भाषा से हिन्दी मे अनुवाद किया है जो इस पुस्तक मे प्रकाशित होने जा रहा है। यह ग्रन्थ आत्म शक्तियो को प्रगट करने मे सक्षम हो, यही मगल कामना है।

देव शास्त्र गुरु भक्त शान्तिकुमारजी गगवाल आदि सभी कार्यकर्त्ता अत्यन्त सलग्नता पूर्वक ग्रन्थ प्रकाशन के कार्य को सम्पन्न कर रहे है उन्हे इसमे पूर्ण सफलता प्राप्त हो और वे जिनवाणी की सेवा के फलस्वरूप परम्पराय केवलज्ञान के भाजन बनें, यही उनके प्रति मेरा शुभाशीर्वाद है।

श्री १०५ आर्यिका विशुद्धमति

स्थान-मोजमाबाद
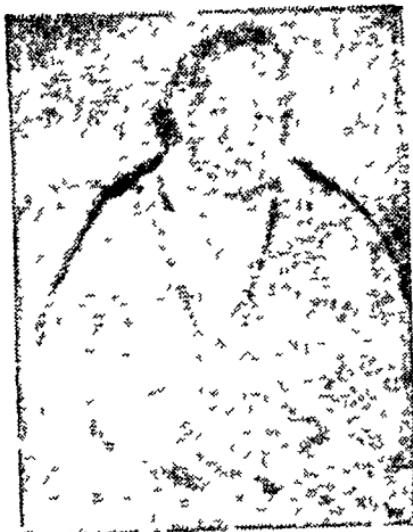
श्री १०५ क्षुल्लक सिद्धसागरजी
महाराज का आशीर्वाद

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि श्री दिगम्बर जैन कुन्थु विजय ग्रन्थमाला समिति, जयपुर (राजस्थान) बहुत ही कम समय मे दूसरी पुस्तक श्री चतुर्विंशति तीर्थङ्कर अनाहत यंत्र मंत्र विधि का प्रकाशन करवा रही है। ग्रन्थ का अनुवाद कन्नड भाषा से हिन्दी भाषा मे परम पूज्य श्री १०८ गणधराचार्य कुंथुसागरजी महाराज ने बहुत ही परिश्रम से किया है। मैंने इस पुस्तक का अवलोकन किया है। अवलोकन करने से यह निश्चय हुआ है कि लोक कल्याण मे अवश्य ही उपयोगी रहेगी। पुस्तक प्रकाशन कार्य मे कार्यरत प्रकाशन संयोजक श्री शान्तिकुमारजी गंगवाल व इनके सभी सहयोगी शुभाशीर्वाद के पात्र है।

इनके प्रयत्न सराहनीय है। इनको इस कार्य मे सफलता प्राप्त हो, ऐसा मेरा इनको आशीर्वाद है।

- क्षुल्लक सिद्धसागर

स्थान :-खानियाँ, जयपुर
दिनाक १८-४-८२
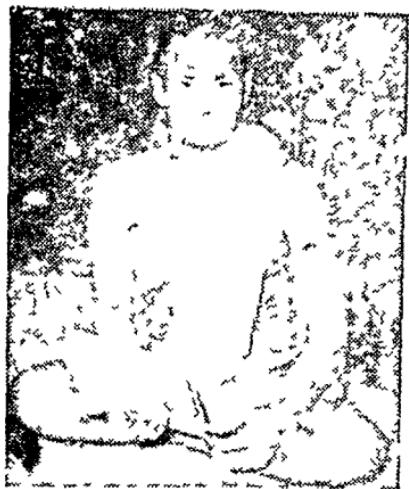
श्री १०५ क्षुल्लक सन्मतिसागरजी
"ज्ञानानन्दजी" महाराज का
शुभाशीर्वाद

श्री तीर्थ कर परमदेवाय नम

यत्र मत्र तत्र जैन दर्शन की प्राचीन निधि है। श्री दिगम्बर जैन कुन्थु विजय ग्रन्थमाला समिति जयपुर (राजस्थान) द्वारा अभी-अभी लघुविद्यानुवाद ग्रन्थ प्रकाशित किया गया है और अब पूज्य श्री १०८ गणधराचार्य कुन्थुसागरजी महाराज द्वारा कन्नड भाषा से हिन्दी भाषान्तरित श्री चतुर्विंशति तीर्थ कर अनाहत यत्र मत्र विधि नामक पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है। आशा है यह समाज के लिये सुख शान्ति का कारण बनेगी।

पूज्य श्री १०८ गणधराचार्य कुन्थुसागरजी महाराज से मेरा निकट का परिचय है। समता और वात्सल्य तथा निर्ग्रन्थता आपके विशेष गुण कहे जा सकते है। आपका सघ सग मे निर्लिप्त रहता हुआ स्वपर कल्याण मे अग्रणीय है।

श्री शान्तिकुमारजी गगवाल का पुरुपार्थ सराहनीय है। आप जिस कार्य को हाथ मे लेते है पूर्ण जिम्मेदारी के साथ निभाते है। भगवान महावीर के २५००वे निर्वाण महोत्सव वर्ष मे आप व

आपके अन्य सहयोगियो द्वारा चौवीस तीर्थंकरो की जन्म जयन्ती महोत्सवो मे आपकी लगनशीलता का समाज को विशेष परिचय मिला है। आप सगीत कला के भी विशेषज्ञ है जिससे समाज विशेष लाभान्वित है।

मेरा श्री शान्तिकुमारजी गगवाल एव उनके सहयोगी समिति के अन्य सदस्यगणो को पूर्ण आशीर्वाद है कि यह इसी प्रकार से गुरुभक्ति, समाजसेवा एव सम्यक् साहित्य का प्रकाशन कर सम्यकज्ञान के प्रचार एव प्रसार मे सफल हो।

क्षुल्लक सन्मतिसागर

४८/२, रावजी बाजार, इन्दौर

दिनाक ८-४-८२

डॉ० प्रो० अक्षयकुमार जैन

एम. ए (हिन्दी-सस्कृत) एफ जे पी एच साहित्य-आयुर्वेद धर्म-रत्न सिद्धात शास्त्री सम्पादन कला विशारद आर. एम पी फलित ज्योतिष विशेषज्ञ।

मुझे यह जानकर हार्दिक आनन्द हुआ कि कन्नड भाषा के ग्रन्थरत्न श्री चतुर्विशति तीर्थकर अनाहत यत्र मत्र विधि का गणधराचार्य पूज्य १०८ श्री कुन्थुसागरजी महाराज द्वारा हिन्दी अनुवाद ग्रन्थमाला प्रकाशित कर रही है।

दक्षिण के साहित्य की यह अनुपम सारस्वत निधि उत्तर के जिज्ञासुओ और मुमुक्षुओं को शाति सतोषामृत पान तो करावेगी ही साथ ही चौबीस तीर्थकरो के पावन चित्र-चरित्र-पूजा-गुणानुवाद स्तवन मानव मात्र को अध्यात्म की गगा मे अवगाहन करा लोक परलोक दोनो को रत्नत्रय पाथेय दे आत्मोपलब्धि कराने मे समर्थ होगी। यत्र मत्र के विधि विधान का मणिकाँचन सयोग इस कृति को जहा ऐतिहासिक अमरता प्रदान करेगा, वही भौतिक जीवन की

समस्याओ के लिये वैज्ञानिक समाधान भी प्रस्तुत करेगा। नागार्जुन यत्र विधान तो विश्व विख्यात है ही इसका प्रकाशन भी ज्ञान-विज्ञान के नये क्षितिज खोलेगा।

ओकार ध्वनि रूप जिनवाणी के इन दुर्लभ वैज्ञानिक रूपो को प्रकाशित कर आप सचमुच ही वात्सल्य और प्रभावना अग स्वरूप सम्यक्त्व शिरोमणि हो रहे है। आचार्यश्री के चरणो मे मेरे कोटिश वदन तथा जिनवाणी सेवा के लिये-आपको अनेकानेक साधुवाद।

—अक्षयकुमार जैन
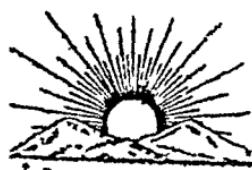
साहू श्रेयांसप्रसाद जैन

निर्मल बिल्डिंग ३, फ्लोर
नरिमन पाइन्ट,
बम्बई ।

दिनाक १३अप्रेल, १६८२

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि समिति के प्रयास से "श्री चतुर्विशति तीर्थकर अनाहत यत्र मत्र विधि" नामक पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है। आपका यह प्रयास प्रशसनीय है।

मुझे आशा है, ऐसे प्रकाशन से समाज को यत्र मत्र विधि की सम्यक जानकारी समुपलब्ध हो सकेगी एव इसका उपयोग समयानुसार किया जा सकेगा। आपका यह प्रकाशन जनकल्याणकारी सिद्ध हो, यही मेरी शुभ कामना है।

श्रेयांसप्रसाद

सरसेठ श्री भागचन्द सोनी

अजमेर
दिनाक १३-४-८२

ग्रन्थ माला समिति द्वारा मंत्र शास्त्र का प्रकाशन करने के समाचार अवगत कर प्रसन्नता हुई ।

मै इसकी सफलता की कामना करता हू और आशा करता हू कि जिस उद्देश्य से यह पुस्तक प्रकाशित हो रही है उससे सब लाभान्वित होगे ।

सधन्यवाद ।

भागचन्द सोनी

वाद किया जो यह आपके सम्मुख प्रस्तुत है। यह छोटी सी पुस्तक लोकोपयोगी है। जैन समाज अवश्य ही इससे लाभान्वित होगा। इस पुस्तक मे वर्णित यत्र व मत्र मे कही-कही कमी भी हो सकती है। मैंने अपनी बुद्धि के द्वारा सशोधित किया है, फिर भी कही कमी रह गई हो तो यत्र मत्र के ज्ञाता विद्वान सुधार लेवे और मुझे छद्मस्थ जानकर क्षमा करें। इस ग्रंथमाला से इस विषय पर यह दूसरी पुस्तक निकल रही है, जिसका श्रेय इस ग्रथ-माला के अच्छे-अच्छे कर्मठ व्यक्ति श्री शान्तिकुमारजी गगवाल व श्री लल्लूलालजी गोधा आदि को है। इस ग्रथमाला का कार्य बहुत ही सुन्दर एव सुनियोजित ढग से सम्पन्न हो रहा है। मेरा इनको पूर्ण आशीर्वाद है कि यह इस कार्य में निरन्तर उन्नति करते रहे एव जैनधर्म की प्रभावना मे सतत् प्रयत्नशील बने रहे।

श्री १०८ गणधराचार्य
कुन्थुसागर

प्रस्तावना

संसारी जीवो में आत्मज्ञानी जीव सतत परमात्म-स्वरूप की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील है। यह जीव स्व-स्वरूप का पूर्ण ज्ञाता होते हुए भी पुद्गल कर्मों के बन्धन से स्वयं को मुक्त करने मे कैसा पुरुषार्थ करे? क्या विचार करे? किस विधि को अपनायें? ये प्रश्न अज्ञानतावश वा ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपक्षमोपलब्धि के अभाव के कारण उसके सम्मुख है। ज्ञानावरण का क्षयोपक्षम, धर्मध्यान, शुक्लध्यान और मोक्षप्राप्ति के उपायो को आत्मसात् करने की दृष्टि से, स्वात्मध्यान की ओर अग्रसर होने के लिए, स्वात्मपरिणामो मे प्रथम एकाग्रता तदनन्तर चिन्तानिरोध की प्राप्ति के लिए मन्त्रो एव यन्त्रो का उपयोग किया जाता रहा है। पञ्चपरमेष्ठीवाचक णमोकार मन्त्र को इस युग के श्रुतज्ञान परम्परा के प्रतिष्ठापक मुनि श्री १०८ धरसेनाचार्य ने अनादि निधन कहा है। इस मन्त्र के प्रति अनादिनिधन शब्द का प्रयोग शब्दात्मक पुद्गल के पर्याय का परिवर्तन एवं उसका ध्रौव्य पुद्गल द्रव्यात्मकता होने से त्रिकालाबाधित सत्य की कसौटी पर आज के वैज्ञानिक साधनो के द्वारा सिद्ध हो गया है।

धवलादि ग्रन्थो के प्रणेता मुनि श्री १०८ धरसेनाचार्य ने भी अपने शिष्यत्व को धारण करने की योग्यता की परीक्षा के लिये आये हुये मुनि श्री भूतबली एव पुष्पदन्त की परीक्षा "मन्त्रसाधना" विधि से की थी। उनके मन्त्रसिद्धि के अनुसार सार्थकता प्राप्त हुये नाम भी है। परीक्षा मे साफल्य प्राप्ति के अनन्तर ही उन्हे श्रुत का ज्ञान कराया गया था। इसलिये मन्त्रशास्त्र भी द्वादशागरूप श्रुत के विद्यानुवाद नामक का विषय रहा है। मन्त्रसाधना के द्वारा ही हम एकाग्रता को प्राप्त करते हुये क्रमशः मोक्ष सोपान पर आरूढ़ हो सकते है।

मन्त्र का जाप उसकी शुद्धि, सकलीकरण एवं विधि-विधानपूर्वक करने पर ही मन्त्रसिद्धि प्राप्त हो सकती है जो लौकिक वाञ्छापूर्ति तथा आत्मोन्नति मे निमित्त बन सकती है। मन्त्र मे निहित वाक्य, शब्द, अक्षर एवं उनकी रचना ये सब अपनी विशेषता, शक्ति एवं कार्य वैशिष्टोत्पादन के वैचित्र्य से समावेशित है। अरिहन्त की दिव्यध्वनि ॐ एकाक्षरी बीजात्मक होती है, जिसमें समस्त त्रैलोक्य स्थित पदार्थ ज्ञान का बोध होता है। अतः मन्त्र, यन्त्र एव तत्सम्बन्धी शक्ति की विद्यमानता को सम्बल प्रमाण से सिद्धता प्राप्त है।

ध्वनि एवं आकृति की शक्ति को वैज्ञानिको ने भी

तरंगों के माध्यम से सम्पूर्ण जगत् के समक्ष प्रदर्शित किया है। हम सभी उन शक्तियों के उपयोग से दैनिक जीवन मे लाभान्वित है। मन्त्रध्वनि एवं यन्त्राकृति भी आत्मा के परिणामो के परिस्पन्दन के (Vibrations) निमित्त से उत्पन्न पुद्गल में (Matter) परिवर्तन है, और वह असीमित, अलौकिक तथा अप्रतिहत शक्ति है, जिसके द्वारा अन्य पदार्थ अथवा प्राणियो को भी तदनुरूप कार्य वैचित्र्य मे परिवर्तित किया जाना है। उसे ही चमत्कार रूप मे समझा जाता है। वाह्य विषयो की ओर जिनकी दृष्टि है वे मन्त्रो का उपयोग वाह्यनिमित्त की अपेक्षा रखते हुए करते है किन्तु अन्तर्मुखी जन स्वात्मोन्नति मे उसे निमित्त बनाते है।

सत्य यह है कि आज मंत्र, मंत्र की ध्वनि, उसका उच्चारण, यंत्र की रचना का ज्ञान, उसकी आकृतिमूलकता का परिज्ञान इत्यादि के सम्बन्ध मे अनभिज्ञता है। अतः तत्सम्बन्धी शक्ति की प्राप्ति करने वाले संतपुरुषो का दर्शन होना भी दुर्लभ है। सिद्धियां, अणिमादि ऋद्धियां प्राप्त करने के इच्छुक एवं तत्सम्बन्धी साधक ज्ञान प्रदाता गुरुओ की उपलब्धियाँ आज के युग की प्रमादवशता एवं परोपकार-हीनता की भावनाओ के कारण नगण्य परिणामात्मकता को प्राप्त होती जा रही है।

मंत्र के उच्चारण से उत्पन्न हुई तरङ्गों के आकृति की रचना (Photograph of Vibrations) ही यन्त्र का प्रतिरूप है। हम चांदी, ताम्रादि पत्रो पर लिखित मन्त्र को यंत्र कहते है किन्तु वह तो केवल मंत्र का स्मरण रहे इस उद्देश्य का प्रतिरूपक है। वास्तविकता मे ध्वन्यात्मक उच्चारण से आकाशस्थित वायु के माध्यम में कम्पायमान तरंगो से जो आकृति रचित हो उसका ज्ञान जो स्वात्मज्ञान के द्वारा होगा वही उस यत्र का ज्ञान है। उस यंत्र में लौकिक कार्य सम्पादन शक्ति अन्तर्निहित है। उस शक्ति से ही ताम्रपत्रादि में चमत्कारिकता को प्रगट किया जा सकता है। वही आत्मशक्ति के प्रभाव का द्योतन करती है।

मंत्र-यंत्र एव तंत्र का विषय त्यागी, तपस्वी, साधुजन ही कर सकते है लेकिन उनका उद्देश्य स्वात्मस्वरूप प्राप्ति मुख्य होता है और धर्म प्रभावना हेतु उसका चमत्कारिक प्रयोग यथावसर स्वयमेव होता है।

श्री दिगम्बर जैन कुंथु विजय ग्रन्थमाला समिति चतुर्विशति तीर्थंकर अनाहत यंत्र-मत्र विधि नामक यह ग्रंथ द्वितीय पुष्प रूप मे प्रकाशित कर रही है। यह सभी के द्वारा सराहनीय प्रयास माना जायेगा। मत्रो के अक्षरादि मंगलमय होते है, मङ्गलता के वाचक होते है और

मङ्गलकारी होते है। अतः यह सभी प्राणिमात्रों के लिये मङ्गलकारी बने। धर्म प्रभावना मे संलग्न ग्रंथमाला के अधिकारीवृन्द एव सदस्यो का प्रयत्न सराहनीय है। वे सतत ऐसे शुभ कार्यों के द्वारा धर्म एवं ज्ञान की सेवा करते रहे यही शुभकामना है।

भवदीय,
आचार्य महादेव धनुष्कर
जैनदर्शनाचार्य, साहित्याचार्य,
एम ए,, बी, एस-सी,
आयुर्वेदरत्न।
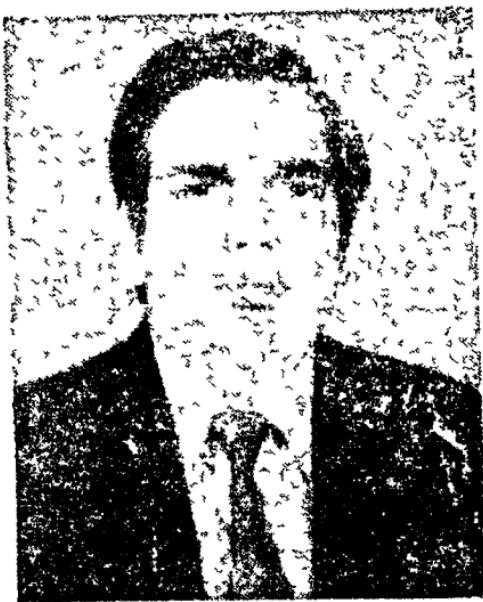
श्रद्धा भक्ति विनय पूर्वक
प्रकाशन सयोजक
के

दो शब्द

परम पूज्य समाधि सम्राट तीर्थभक्त शिरोमणि १०८ परम्पराचार्य परमेष्ठी श्री महावीरकीतिजो गुरु महाराज, भारत गौरव विद्यालकार सम्यक्त्व चूडामणि श्री १०८ आचार्यरत्न देशभूषण जी महाराज, निमित्तज्ञान शिरोमणि श्री १०८ आचार्य विमल सागरजी महाराज श्री १०८ आचार्यरत्न धर्मसागरजी महाराज, श्री १०८ सन्मति सागरजी महाराज श्री १०५ गणिनी आर्यिका विदुषी रत्न, सम्यकज्ञान शिरोमणि, सिद्धान्त विशारद विजयमति माताजी व अन्य समस्त साधुओ के पावन पवित्र चरण कमलो मे सविनय श्रद्धा भक्ति त्रियोग पूर्वक विचार नमोस्तु अर्पित कर पुस्तक प्रकाशन के बारे मे दो शब्द लिख रहा हू ।

प्रस्तुत पुस्तक श्री चतुर्विशति तीर्थंकर अनाहत यंत्र मत्र विधि

का कन्नड भाषा से हिन्दी भाषा मे अनुवाद परम पूज्य श्री १०८ गणधराचार्य कुंथुसागर जी महाराज ने बहुत ही कठिन परिश्रम से किया है। पुस्तक मे चौवीस तीर्थकरो के चित्र, मत्र, विधि, उनसे प्राप्त फल व उनके यत्र प्रकाशित किये गये है। नागार्जुन यत्र विधान व उसके यत्र भी प्रकाशित किये गये है।

आज के इस भौतिक युग मे तीर्थकर भगवान की श्रद्धासहित इन मत्रो यत्रो के माध्यम से आराधना करने से मनुष्य सुख व शान्ति को प्राप्त कर सकता है। हमारे वीतराग धर्म की ओर लोगो की आस्था कम हो गई है और मिथ्या धर्मो की ओर समाज का झुकाव अधिक होता जा रहा है। सामाजिक वातावरण अत्यन्त दयनीय है। सभी मिथ्या देव शास्त्र गुरु की पूजा मे सलग्न है। क्योकि लोगो मे श्रद्धान पाया जाता है कि इनसे ही हमारा सकट टल जावेगा। परन्तु ऐसा होता नही है। सच्चे वीतराग धर्म के प्रति लोगो मे आस्था बने इसलिये जन कल्याण की भावना को ध्यान मे रखकर परमपूज्य श्री १०८ गणधराचाय कुथुसागरजी महाराज साहब ने प्रस्तुत पुस्तक का अनुवाद करके महान उपकार किया है। आचार्य महाराज के इस महान कार्य के लिये हम सभी कृतज्ञ है। आचार्य महाराज के दर्शन कर, मुझे कवि भागचन्द जी द्वारा लिखित भजन 'ऐसे साधु सुगुरु कब मिलि है" "आप तरे और परको तारे निस्प्रेही निर्मल है, की याद आ जाती है। आचार्य कुथु सागर जी महाराज ने वर्ष १९७२ मे जयपुर स्थित राणाजी की नशियां खानिया मे विशाल सघ के साथ चातुर्मास किया था तभी से मेरे ऊपर विशेष कृपा रही है। समता, वात्सल्य तथा निर्ग्रन्थता आपके

विशेष गुण है। आचार्य कुंथुसागर जी महाराज व विजयमति माताजी के नाम पर ही इस ग्रंथ माला समिति का नाम रक्खा गया है। ग्रथ माला समिति का यह दूसरा महत्वपूर्ण प्रकाशन है। जिसका प्रकाशन आज तक नही हुआ है। समिति द्वारा लघुविद्यानुवाद (यत्र मत्र, तंत्र, विद्या का एक मात्र सदर्भ ग्र थ) का प्रथम प्रकाशन श्री बाहुबली महामस्तकाभिषेक के पावन पुनीत अवसर पर करवाया गया था। जिसका विमोचन निमित्तज्ञान शिरोमणि श्री १०८ आचार्य विमलसागरजी महाराज साहब के कर कमलो द्वारा हुआ था।

श्री १०५ क्षुल्लक सिद्ध सागर जी महाराज (मोजमाबाद) का भी बडा आभारी हू। आपकी वृद्ध अवस्था होते हुए भी आपने अमूल्य समय मे से समय निकालकर पुस्तक का अवलोकन कर मुझे मार्ग दर्शन दिया।

श्री १०५ क्षुल्लक सन्मति सागर जी "ज्ञानानन्द जी" महाराज ने भी अपने अमूल्य समय मे मे समय निकालकर मुझे सहयोग प्रदान किया है। मैं उनका बडा आभारी हू। क्षुल्लक महाराज बहुत ही ज्ञानी व सहयोगी प्रवृति के साधु है। भगवान महावीर के २५०० वां निर्वाण महोत्सव वर्ष मे हमारे द्वारा आयोजित चौबीस भगवान के जन्म जयन्ती महोत्सवो मे चौबीस भगवान की चौबीस पुस्तकें लिखकर हमे प्रदान की थी जिसे हम प्रत्येक जयन्ती के अवसर पर प्रकाशित करवा सके थे। अपने आप मे यह महान कार्य था जो हम आपके सहयोग से निर्विघ्न रूप से बहुत ही शानदार महोत्सवो के साथ पूर्ण करने मे सफल हुए।

ग्रथ माला समिति के प्रकाशन कार्यो मे प्रबन्ध सम्पादक श्री लल्लूलालजी जैन गोधा का बडा आभारी हूं, कि आप अपने व्यस्त कार्यक्रमो में से समय निकाल कर सहयोग प्रदान कर रहे है। श्री गोधा जी जयपुर जैन समाज मे धार्मिक व सामाजिक कर्मठ कार्य कर्त्ताओ मे से एक है।

ग्रन्थ माला समिति के कार्यो मे आदरणीय श्री मोतीलाल जी हाडा बहिन श्रीमती कनक प्रभाजी हाडा, श्री भागचन्द जी छावड़ा, श्री हीरालाल जी सेठी, श्री कपूरचन्द जी पाड्या, श्री राजकुमार जी बोहरा श्री लूणकरण जी पापडीवाल, श्री रमेश चन्दजी जैन का भी बडा आभारी हू कि जिन्होने समय समय पर मेरे को पूर्ण सहयोग प्रदान किया है। इसके अलावा अन्य महानुभावो ने जिन्होने सहयोग प्रदान किया उन सभी को धन्यवाद देता हूं।

मेरी धर्म पत्नि श्रीमती मेमदेवी गगवाल व सुपुत्र श्री प्रदीप कुमार गगवाल का भी बडा आभारी हू कि जिन्होने मुझे गृह कार्य से मुक्त रखकर प्रकाशन कार्यो मे सहयोग प्रदान किया है। आचार्य महाराज के आशीर्वाद से श्री प्रदीप कुमार ग..वाल द्वारा की गई सेवाए काफी प्रशसनीय है। अपने अध्ययन कार्य मे व्यस्त होते हुए भी ग्रन्थ माला मे व्यवस्थापक पद पर कार्य करके अपने कर्त्तव्य को निभाया हे।

प्रकाशन कार्य मे हमारे आर्टिस्ट श्री पुरुषोत्तम जी शर्मा को भी धन्यवाद देता हू। जिन्होने अपनी सुन्दर कला से ग्रन्थ मे प्रकाशित सभी चित्रो को प्राथमिकता देकर बनाने मे सहयोग प्रदान किया है।

आदरणीय पण्डित साहब श्री धनुषकर जी आचार्य संस्कृत कालेज जयपुर को भी धन्यवाद देता हू कि जिन्होने अपने व्यस्त समय मे से समय निकालकर पुस्तक प्रकाशन कार्य मे सहयोग देने के साथ ही प्रस्तावना लिखने की कृपा की है। आशा है आपका सहयोग हमे इसी प्रकार भविष्य में भी मिलता रहेगा। श्री महावीर प्रसाद जैन, प्रोप्राईटर मूनलाइट प्रिन्टर्स जयपुर को भी धन्यवाद देता हू कि जिन्होने पुस्तक की छपाई का कार्य समय पर करके सहयोग प्रदान किया है।

ग्रन्थ माला समिति द्वारा प्रकाशन कार्यो को बहुत ही सावधानी पूर्वक देखा गया है फिर भी कमिया रहना स्वाभाविक है। मेरा स्वयं का अल्पज्ञान हे और पुस्तक मे प्रकाशित सामग्री मेरे सामान्य ज्ञान की परिधि के बाहर है। आचार्य महाराज व माता जी की प्रेरणा व आशीर्वाद से यह कार्य कर रहा हू अत कमियो व त्रुटियो के लिये क्षमा करेगे।

साधुगण विद्वतजन व पाठकगण जो भी इसमे त्रुटिया रही हो या कोई सुझाव हो तो कृपया श्री १०८ गणधराचार्य कुन्थु-सागरजी महाराज को सूचित करने की कृपा करें जिससे आगामी प्रकाशन मे उनको दूर किया जा सके।

ग्रन्थ माला समिति की ओर के सभी दातारो से भी निवेदन करता हू कि हमे आर्थिक सहयोग प्रदान करें, क्योकि हमारी भावना है कि इस ग्रन्थ माला समिति से और भी महत्वपूर्ण ग्रंथो का प्रकाशन हो जिसका प्रकाशन आज तक नही हुआ है।

पुस्तक प्रकाशन के लिये जिन जिन ने आशीर्वाद एवं शुभकामनाए भेजी है, मैं उन सभी का बडा आभारी हू और आशा करता हूं कि भविष्य मे भी आपका इसी प्रकार सहयोग मिलता रहेगा।

अन्त मे श्री १०८ गणधराचार्य कुन्थुसागर जी महाराज की आज्ञा से भारत गौरव, विद्यालकार, सम्यक्त्व चूडामणि परमपूज्य १०८ आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज के कर कमलो मे यह पुस्तक विमोचन हेतु समर्पित करते हुए आज मैं अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव करता हूं कि आचार्य महाराज की आज्ञानुसार मैंने इस कार्य को करके सफलता प्राप्त की है।

पुन. नमोस्तु एव आशीर्वाद की भावना के साथ।

गुरुभक्त सगीताचार्य

शान्ति कुमार गगवाल बी काम

प्रकाशन सयोजक

प्रबन्ध सम्पादक के दो शब्द

कुन्थु विजय ग्रन्थ माला समिति का प्रथम पुष्प "लघविद्यानुवाद" (यत्र, मत्र तत्र विद्या से सम्बन्धित एक मात्र सन्दर्भ ग्रन्थ) जिसके सग्रहकर्त्ता श्री १०८ आचार्य गणधर श्री कुन्थुसागर जी महाराज एव श्री १०५ गणनी आर्यिका श्री विजयमती माताजी का प्रकाशन किया जा चुका है जिसका विमोचन श्री १०८ आचार्य सन्मति दिवाकर निमित्त ज्ञान शिरोमणि विमलसागर जी महाराज के कर कमलो द्वारा श्रवणवेलगोला, चामुण्डराय मण्डप मे भगवान बाहुवली सहस्राव्दी महामस्तकाभिषेक के पुनीत अवसर पर दि० २४/२/८१ को हुआ है।

ऐसे दुर्लभ ग्रन्थ के प्रकाशन के एक वर्ष पश्चात कुन्थु विजय ग्रन्थमाला का द्वितीय पुष्प चतुर्विशति तीर्थ कर यत्र मत्र विधि जिसे कन्नड भाषा से हिन्दी मे प्रथम बार अनुवाद श्री १०८ गणधराचार्य कुन्थुसागर जी महाराज ने बहुत ही कठिन परिश्रम से किया है। इस प्रकार का प्रकाशन आज तक नही हुआ।

पुस्तक के कलेवर को देखने पर मुझे भी बडा आश्चर्य हुआ क्योकि मैने इस प्रकार की सामग्री पहिले कभी नही देखी थी।

यह प्रकाशन भी जयपुर स्थित श्री पार्श्वनाथ चूलगिरी क्षेत्र, पचकल्याण प्रतिष्ठा महोत्सव के पुनीत अवसर पर किया जा रहा है, पुस्तक मे चौवीस तीर्थ करो के यत्र विधि व उनके यत्र प्रकाशित किये गये है, जिसकी श्रद्धा सहित आराधना करने से आज के इस भौतिक युग मे कई प्रकार के कष्ट निवारण हो सकते है, और मनुष्य सुख व शान्ति को प्राप्त कर सकता है। यह पुस्तक जन कल्याण के लिये बहुत ही उपयोगी रहेगी।

ग्रन्थ मे सकलित सामग्री मेरे सामान्य ज्ञान की परिधी से बाहर है, तथा मै इस सामग्री के बारे मे बिल्कुल अनविज्ञ था, लेकिन महाराजश्री के आदेशानुसार श्री शान्ति कुमार जी गगवाल को मैने भी इस कार्य मे सहयोग देने का आश्वासन देकर ग्रन्थमाला समिति के प्रकाशित पुस्तक द्वितीय (प्रबन्ध सम्पादक के पद को स्वीकार करते हुये ग्रन्थ के प्रकाशन करने मे समय लगाया है। मै प० महादेव धनुषकर आचार्य श्री दिगम्बर जैन सस्कृत कालेज जयपुर का अत्यन्त आभारी हू, जिन्होने पुस्तक के कलेवर को सुचारु रूप से शीघ्र प्रकाशन कराने मे सहयोग दिया है।

ग्रथ के मुद्रण मे कई त्रुटियो का रहना स्वाभाविक है, और त्रुटिया रही भी होगी, वे सव मेरी अल्प बुद्धि के कारण है, अत साधुवर्ग विद्वतजन, पाठकगण से क्षमा चाहता हू ।

अक्षय तृतीया, दिनाक २६-४-८२
४६६, प० चैनसुख दास मार्ग
किशनपोल बाजार, जयपुर

लल्लूलाल जैन गोधा
प्रबन्ध सम्पादक

तीर्थंकर भगवान की आराधना से

तीर्थ कर परम्परा अनादि काल से प्रचलित है। अक्षुण्ण रूप से अनादि काल तक चलती रहेगी। भरत क्षेत्र की अपेक्षा अनतानत चौबीस व्यतीत हो चुकी है। एक कल्प काल मे तीर्थङ्कर भगवान चौबीसी ही होते है। सामान्य आत्माओ ने तीर्थङ्कर बन कर अपने समग्र कार्यो की सिद्धि कर सच्चे सुख को पा लिया है। जो भी भव्य आत्मा तीर्थङ्करो की पूजन, स्तुति, ध्यान करता है वह भी अपने इच्छित कार्यो की सिद्धि करता हुआ मोक्षमार्ग पर अग्रसर होता है। यद्यपि तीर्थ कर भगवान पच परमेष्ठी किसी को कुछ देते नही है। क्योकि वह वीतरागी है देना, लेना काम तो सरागियो का है। फिर भी भगवान की भक्ति के प्रभाव से सचित पुण्य के कारण रक्षक देवगण भगवान के भक्तो की मनोकामना यथाशक्ति पूर्ण करते है। उदाहरण के लिये—

१. आदिप्रभु की भक्ति मे लीन नमि और विनमि को धरणेन्द्र द्वारा उत्तर एव दक्षिण श्रेणी के राज्य की प्राप्ति हुई।

२ राजा के द्वारा ४८ कोठो के अन्दर बन्द आचार्य मानतु ग स्वामी ने भगवान की भक्ति के प्रभाव से मत्र स्वरूप भक्तामर स्तोत्र की रचना करते ही बधनो से मुक्ति प्राप्त की।

३ एकीभाव मे निमग्न वादिराज स्वामी भक्ति के प्रभाव से क्षण-मात्र मे कुष्ठ रोग से मुक्त हो गये।

४ चौवीस तीर्थ करो की भक्ति मे लीन सम्यक दृष्टि समन्तभद्र स्वामी ने स्वयभ स्त्रोत की रचना करते हुये नमस्कार किया

ध्यान की एकाग्रता के कारण पिंडी फट कर चौमुखी चन्द्रप्रभु भगवान प्रकट हो गये।

शील व्रती सेठ सुदर्शन को रानी के बहकावे मे आकर राजा द्वारा शूली पर चढाया गया परन्तु सत्यता मे किये हुये तीर्थङ्कर भगवान के स्मरण मात्र से शली सिहासन रूप मे परिवर्तित हो गयी।

सप्त व्यसनो का सेवन करने वाला, वेश्या मे तीव्र आसक्त अजन चोर रानी का हार चुराकर ले जाते हुये मार्ग मे एक व्यक्ति को विद्या सिद्ध करते हुये देखकर तीर्थ कर भगवान के प्रति अटल श्रद्धान मात्र से अजन चोर निरजन बन गया।

अहिसा व्रत मे निश्चल यमपाल चाण्डाल को राजा द्वारा तालाब मे फिकवा दिया गया परन्तु भक्ति एव श्रद्धा के प्रभाव से तालाब मे देवो के द्वारा कमलासन पर विराजमान कर दिया गया।

जहाज से देशान्तर को गमन करते हुये सेठ के द्वारा जहाज के समुद्र मे गिराये जाने पर तीर्थ कर भगवान की अर्चना-आराधना के प्रभाव से छह महीने अथाह समुद्र मे तैरने के उपरान्त भी श्रीपाल समुद्र के किनारे धरातल पर पहु च गये।

तीर्थंकर भगवान की पूजन-भक्ति मे निमग्न सेठ धनञ्जय ने सर्प के द्वारा काट लेने पर विष से ग्रसित अपने मृतक पुत्र को विषापहार स्तोत्र की रचना कर क्षण भर मे जीवित कर दिया।

धवल सेठ के द्वारा श्रीपाल को भांड घोषित किये जाने पर राजा के द्वारा कोटीभट श्रीपाल को फासी पर चढा दिया गया परन्तु तीर्थ कर भगवान के ध्यान के प्रभाव से देवो के द्वारा शूली को सिहासन के रूप मे परिवर्तित कर दिया गया।

१० राजा के द्वारा यौद्धराज दीवान को वृक्ष से बांध कर तोप के गोलो से मारने की आज्ञा दे दी परन्तु तीर्थंकर भगवान की भक्ति के प्रभाव से तोप के दहकते हुये गोले धुआ रूप मे परिवर्तित हो गये।

११ श्रुतसागर मुनिराज से वाद विवाद मे विजित होने पर वलि ब्राह्मण ने अपमान का वदला लेने के लिये रात्रि मे ध्यान मे लीन मुनिराज पर तलवार से वार करने को ज्योही हाथ उठाया कि भगवान के ध्यान की निमग्नता से वन देवता ने ज्यो का त्यो कीलित कर दिया।

१२ सती सोमा के शील की परीक्षा के लिये मगाया गया सर्प तीर्थङ्कर भगवान के स्मरण मात्र से घडे मे रखा हुआ काला नाग श्रद्धालु सोमा के हाथ का स्पर्श होते ही गले का हार वन गया।

१४ 'यह मेरी सौत है' इस प्रकार लाञ्छन लगाकर हथकडी वेडियो से जकड कर तथा सिर के वाल कटवा कर सती चदना को सेठानी के द्वारा अधेरी कोठरी मे डलवा दिया गया परन्तु तीर्थकर भगवान की स्तुत्याराधना के प्रभाव से भगवान महावीर का दर्शन होते ही हथकडी-वेडी सुन्दर आभूषणो के रूप मे तथा कोदो के छिलके नाना प्रकार के व्यजन रूप मे परिवर्तित हो गये।

१५ गर्भावस्था मे सास के द्वारा कलकित कर सती अजना को जगल मे छोड दिया गया परन्तु तीर्थकर भगवान की अर्चनाराधना के प्रभाव से वनवास के अनेको कष्ट तथा २२ वर्ष से पति वियोग से पीडित सती अन्जना का पति वियोग दूर हो गया।

१६ लोकापवाद के भय से रामचन्द्र जी के आदेशानुसार शीलव्रती

सती सीता अग्नि-कुंड मे प्रवेश कर गयी परन्तु तीर्थंकर भगवान की भक्ति के प्रभाव से आकाश मार्ग से गमन करते हुये देवो के द्वारा अग्नि-कुंड को जल-कुंड के रूप मे परिवर्तित कर दिया गया तथा सीता को कमलासन पर विराजमान कर दिया गया।

१७ शीलव्रत पालन मे अग्रणीय सती मनोरमा को सास के द्वारा लाछित किया गया परन्तु तीर्थंकर प्रभु की स्तुत्याराधना के प्रभाव से देवो के द्वारा नगरी के मुख्य द्वार पर लगाये गये वज्रमयी कपाट सती मनोरमा के पैर के अंगूठे का स्पर्श होते ही खुल गये।

१८ पिता के द्वारा रुष्ट होकर जगल मे कुष्ट रोग मे पीडित श्रीपाल को व्याही गयी मैनासुन्दरी तीर्थंकर भगवान की भक्ति आराधना से सातसौ साथियो सहित श्रीपाल का कुष्ट रोग दूर करने मे सफल हुई।

१९ अपमान का वदला लेने की भावना से दुःशासन के द्वारा भरी सभा मे द्रौपदी का चीर खींचे जाने पर तीर्थंकर प्रभु के स्मरण ध्यान के प्रभाव से द्रौपदी का चीर वढता ही चला गया।

२० हाथी पर सवार होकर नदी पार करते समय हाथी को मगर मच्छ के द्वारा पकड लिया गया उस समय सती सुलोचना ने तीर्थंकर प्रभु के स्मरण मात्र से क्षण भर मे सकट दूर कर दिया।

२१ वौद्ध की अनुयायी रानी बुद्धदासी के द्वारा यह कहने पर कि जैन धर्म का रथ पीछे चलेगा हरिषेण की माता को तीर्थंकर भगवान की भक्ति के प्रभाव से देवो के द्वारा जैनधर्म का रथ आकाश मार्ग से निकाल कर धर्म की प्रभावना की गयी।

२२ मुह मे कमल की पाखुडी दवा कर भगवान महावीर के समोशरण मे जाते हुये राजा श्रेणिक के हाथी के पैर तले दव जाने पर भगवान की भक्ति के प्रभाव से मेढक मर कर स्वर्ग मे देव हुआ।

२३. शिखर जी की यात्रा मे गये निर्धन देवपत्त और खेवपत दोनो भाइयो द्वारा सम्मेद शिखर की टोको पर चढाये हुये ज्वार के दाने भक्ति के प्रभाव से मोती रूप मे परिणमित हो गये।

२४ कुछ ही वर्ष पूर्व श्री आचार्य धर्मसागर जी महाराज के सघ मे श्री मुनिराज वर्धमान सागर जी महाराज जी के नेत्रो की रोशनी पूर्ण रूप से चली गयी थी। महाराज श्री यह प्रतिज्ञा कर ध्यान मे लीन हो गये कि आँखें खुलेगी तो आहार करूगा। ध्यान एव शाति भक्ति के प्रभाव से चौबीस घटे के अन्दर ही नेत्रो मे रोशनी आ गयी। यह सत्य घटना जयपुर नगर खानिया राजस्थान की है।
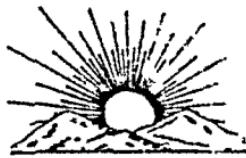
हरिश चन्द्र तोलिया
15, नवजीवन उपवन,
मोती डूंगरी रोड, जयपुर-4

मुनि महात्म्य

प्रथम पक्ष :

तपोनिधि मुनियो को प्रणाम करने से उच्च गोत्र मिलता है, उन्हे यथाविधि दान देने से भोग, उनकी उपासना द्वारा पूजा, उनकी भक्ति करने से सुन्दर रूप तथा स्तवन करने से कीर्ति प्राप्त होती है ।

द्वितीय पक्ष :

जो पुरुष वाणी के द्वारा मुनियो का तिरस्कार करते है वे दूसरे भव मे गू गे होते है, जो मन से अनादर करते है उनकी मानसिक शक्ति नष्ट हो जाती है । जो शरीर से तिरस्कार करते है उन्हे महान शारिरीक कष्ट भोगने पड़ते है । अत तप रूपी धन को धारण करने वाले मुनियो का कभी भी निरादर नही करना चाहिये ।

आत्म ज्ञान

जो आत्मा को जानता है वह सब शास्त्रो का ज्ञाता है ।
विषयो से रिक्त चितवाला योगी आत्मा को जान लेता है ।
आत्मा के अपने (शुद्ध) स्वभाव को ध्याओ ताकि जन्ममरण से छुटकारा मिल सके ।
आत्म ज्ञानी को उपदेश की आवश्यकता नही ।

परम पूज्य श्री १०८ गणधराचार्य कुन्थुसागरजी महाराज से गुरुभक्त प्रकाशन संयोजक शान्तिकुमार गंगवाल व उनकी धर्मपत्नि श्रीमति मेमदेवी गंगवाल, प्रबन्ध सम्पादक लल्लूलाल जैन गोधा प्रकाशन कार्य करने हेतु आशीर्वाद प्राप्त करते हुए ।
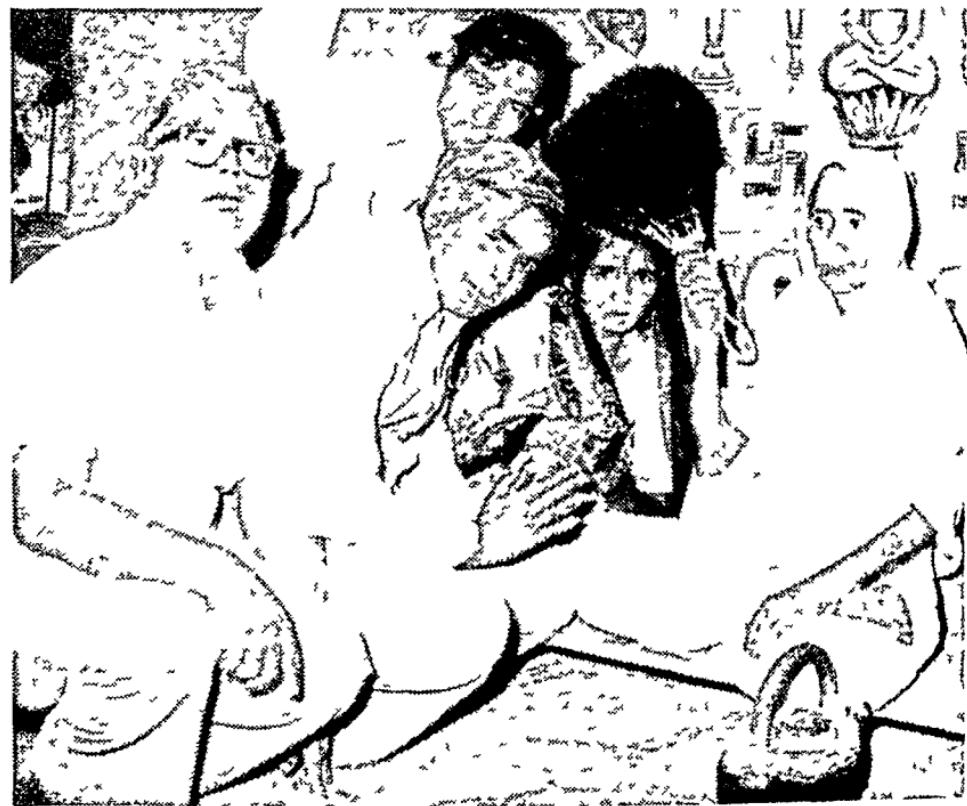
परमपूज्य श्री गणिनी १०५ आर्यिका विजयमति माताजी से गुरुभक्त प्रकाशन सयोजक शान्तिकुमार गगवाल व उनकी धर्मपत्नि श्रीमति मेमदेवी गगवाल, प्रबन्ध सम्पादक लल्लूलाल जैन गोधा प्रकाशन कार्य करने हेतु आशीर्वाद प्राप्त करते हुए।

चौबीस तीर्थकर

तीर्थङ्कर चौबीस होते है। उनके ऋषभनाथ से लेकर श्रीमहावीर पर्यंत नाम है। उनकी पहचान के लिए प्रत्येक के अलग-अलग चिह्न होते है। ये चिह्न निम्न प्रकार है।

क्रम	नाम	चिह्न	क्रम	नाम	चिह्न
१	ऋषभनाथ	बैल	१३	विमलनाथ	शूकर
२	अजितनाथ	हाथी	१४	अनंतनाथ	सेही
३	संभवनाथ	घोडा	१५	धर्मनाथ	बज्रदंड
४	अभिनंदननाथ	बन्दर	१६	शांतिनाथ	हिरन
५	सुमतिनाथ	चकवा	१७	कुंथुनाथ	बकरा
६	पद्मप्रभ	कमल	१८	अरहनाथ	मछली
७	सुपार्श्वनाथ	साथिया	१९	मल्लिनाथ	कलश
८	चंद्रप्रभ	चन्द्रमा	२०	मुनिसुव्रतनाथ	कछुआ
९	पुष्पदंतनाथ	मगर	२१	नमिनाथ	नील कमल
१०	शीतलनाथ	कल्पवृक्ष	२२	नेमिनाथ	शंख
११	श्रेयांसनाथ	गेंडा	२३	पार्श्वनाथ	सर्प
१२	वासुपूज्य	भैंसा	२४	महावीर	सिंह

श्री वीतरागाय नम

पूर्वाचार्य विरचित श्री चतुर्विशति तीर्थंकर अनाहत यंत्र मंत्र विधि

श्री ऋषभनाथ तीर्थंकर अनाहत यंत्र मंत्र विधि

मंत्रः-- ॐ णमो जिणाणच, णमो ओहि जिणाणंच, णमो परमोहि जिणाणं। णमो सव्बोहि जिणाणं ॐ णमो अणंतोहि जिणाणं। ॐ वृषभस्स भगवदो, सिझ्झ धम्मे भगवदो वृषभ स्वामि, धत्त वियराणि अरिहंताण विझ्झाणं महाविझ्झाणं अणमिप्पदेयिक्कम्मियाणि जम्भिकेंशविस के अनाहत विद्यायै स्वाहा।
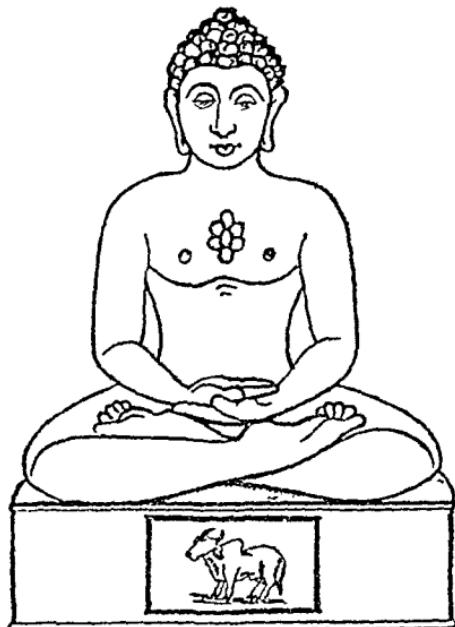
विधि—इस यत्र को सोने अथवा चादी के पत्रे पर खुदवाकर यत्र की प्रतिष्ठा करें। वृषभ तीर्थंकर की मूर्ति को स्थापन कर अनाहत मत्र से १००८ बार पुष्पो से जाप्य तीन दिन प्रात काल करें। कार्य पडने पर उपरोक्त मंत्र का १००० बार जाप्य करें तो सर्वजन वश्य होते हैं। राज दरबार मे जाने पर उत्तम वश्य करण होता है। पहले मत्र अवश्य ही सिद्ध कर लेना चाहिये।

ऋषभनाथ अनाहत
यंत्र नं-१
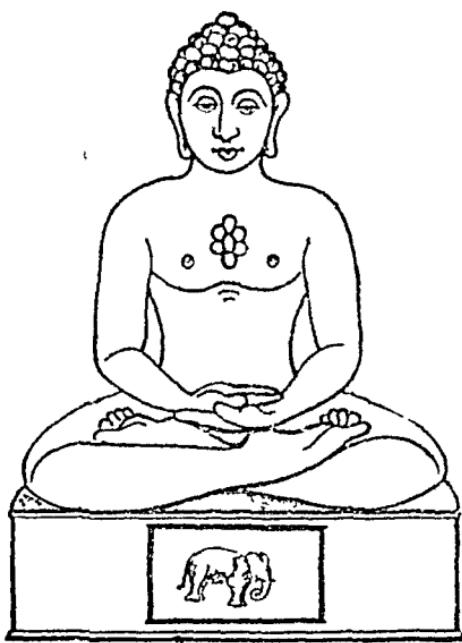
श्री अजितनाथ तीर्थंकर अनाहत यंत्र मंत्र विधि

मंत्र-ॐ णमो भगवदो अजितस्स सिज्झि धम्मे भगवदो विज्झाणं महाविज्झाणं। ॐ णमो जिणाण ॐ णमो परमोहि जिणाणं ॐ णमो सव्वोहि जिणाणं भगवदो अरहतो अजितस्स सिज्झ धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर अजिते अपराजिते पाणिपादे महाबले अनाहत विद्यायै स्वाहा।

विधि—इस मत्र का १०८ वार जाप्य करने से सर्व कार्य की सिद्धि होती है। राज दरबार मे प्रवेश करते समय इस मत्र का स्मरण करने से सर्व वश्य होता है।

इस यत्र को ताम्र पत्र अथवा सुवर्ण या चादी के पत्रे पर लिखकर प्राण प्रतिष्ठा करे, फिर अजित तीर्थंकर भगवान की मूर्ति को, यत्र के ऊपर स्थापन करके पचामृतअभिषेक करके यत्र पूजा करे। इसके बाद १००८ बार पुष्पो से मत्रा का जाप्य करें तो यह सिद्ध होता है।

अजितनाथ अनाहत
यंत्र नं-२
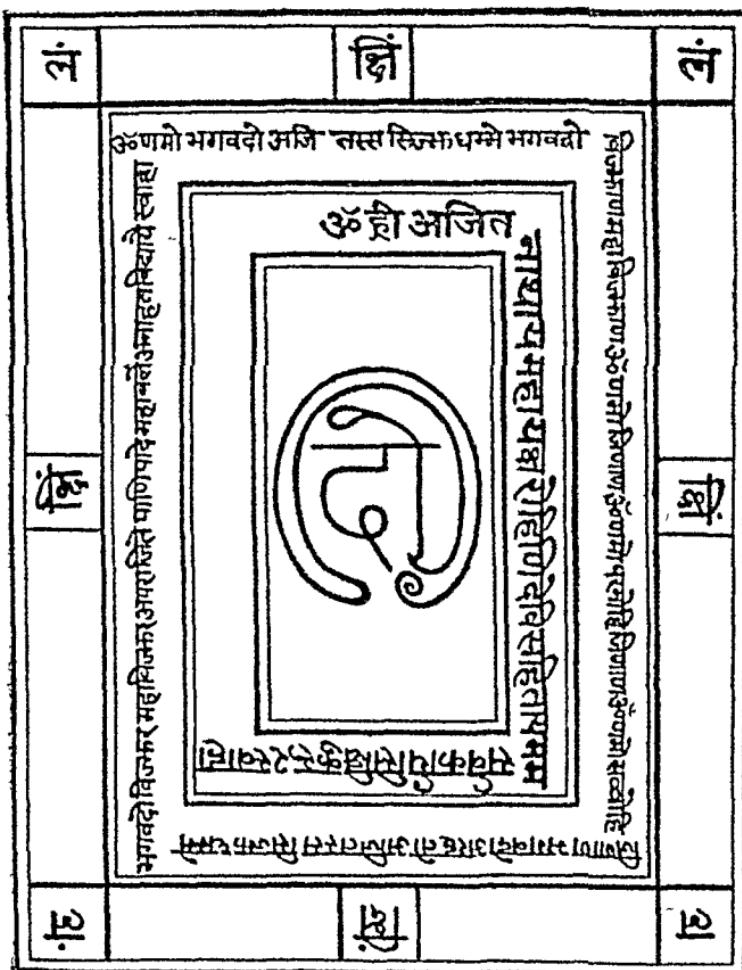
श्री संभवनाथ तीर्थंकर अनाहत यंत्र मंत्र विधि

मंत्र:—
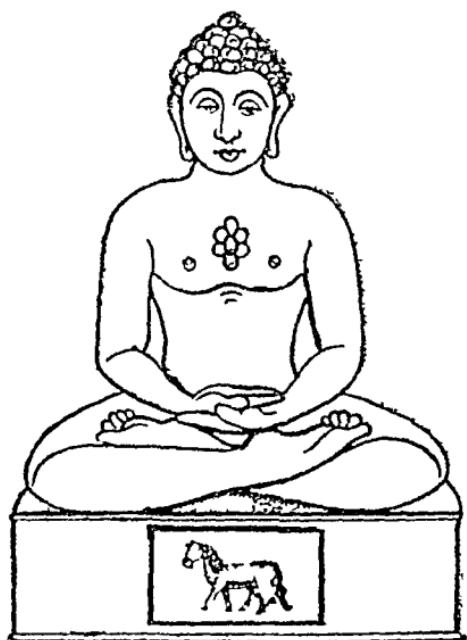
ॐ णमो भगवदो अरहदो शंभवस्स अनाहत विज्जंई सिज्झि धम्मे भगवदो महा विज्झाण महाविज्झा शंभवस्स शंभवे महा शंभवे शभ वाणं स्वाहा ।

विधि — इस मत्र से १०८ बार जाप्य पूर्णिमा या अमावस्या के दिन जाप्य करनें से कार्य सिद्ध होता है। इस यत्र को चादी या सोना अथवा ताम्र पत्र पर लिखकर प्राणप्रष्ठिा करके यत्र के ऊपर संभव नाथ भगवान की मूर्ति की स्थापना करके पचामृताभिषेक करें। फिर १०८ बार पुष्पो से जाप्य करने से कार्य सिद्ध हो जावेगा।

श्री संभवनाथ अनाहत

यन्त्र नं-३

श्री अभिनन्दन तीर्थंकर अनाहत यंत्र मंत्र विधि

मंत्रः—

ॐ णमो भगवदो अरहदो अभिणंदणस्स सिज्झ धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर महाविज्झर अभिणन्दणे स्वाहा ।

विधि— इस मत्र का १०८ बार जाप्य करने से सिद्ध होता है। पानी को मंत्रित करके मुख प्रक्षालन करने से सर्वजन स्वाधीन रहते हैं।

इस यंत्र को सोना चांदी अथवा ताम्र के पत्रे पर लिखकर प्राण प्रतिष्ठा करे फिर यंत्र के ऊपर भगवान अभिनन्दन प्रभु की मूर्ति को स्थापित कर अभिषेक पूजा करके मंत्र का १०८ बार पुष्पों से जाप्य करना चाहिये।

श्रीअभिनन्दननाथ अनाहत
यंत्र नं-४

श्री सुमतिनाथ तीर्थंकर अनाहत यंत्र मंत्र विधि

मंत्रः--
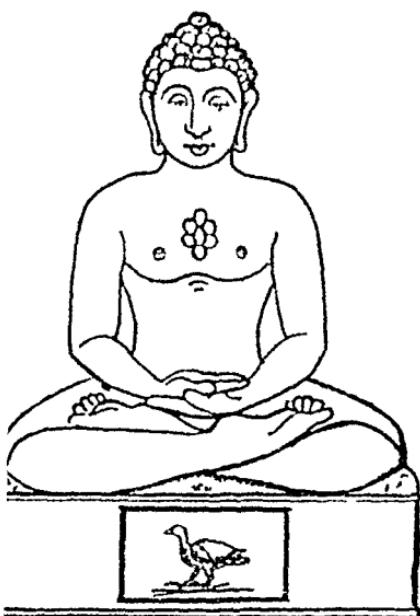
ॐ णमो भगवदो अरहंतो सुमतिस्स सिज्भि-धम्मे भगवदो विज्झर सुमनि सामिणंवानंगे स्वाहा ।

विधि— इस मत्र को १०८ बार त्रिकरण शुद्धिपूर्वक जाप्य करने से पुरुष वश्य होता है। सुमतिनाथ भगवान के अनाहत का १०८ वार जाप्य करना चाहिये।

इस यत्र को सोना, चादी अथवा ताम्र के पत्रे पर लिखवाकर प्राण प्रतिष्ठा करें, फिर यत्र के ऊपर सुमतिनाथ भगवान की मूर्ति स्थापित कर, पचामृताभिषेक, पूजा करके १०८ बार पुष्पो से जाप्य करने से मत्र सिद्ध हो जावेगा। कार्य पडने पर मत्र का स्मरण करें, अवश्य ही काय सिद्ध होगा।

श्री सुमति नाथ अनाहत
यंत्र नं-५

श्री पद्मप्रभ तीर्थंकर अनाहत यंत्र मंत्र विधि

मंत्र:--
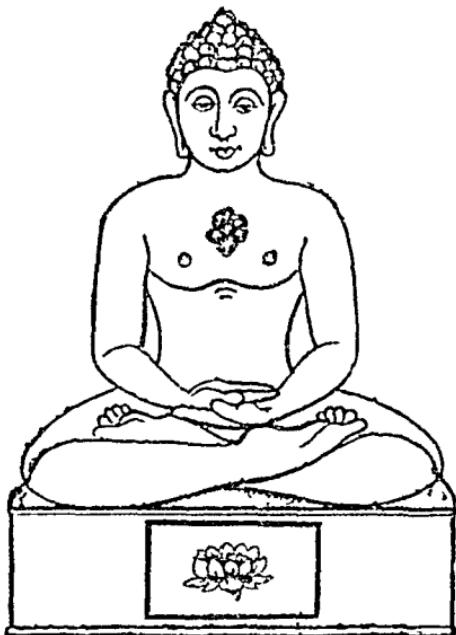
ॐ णमो भगवदो अरहदो पोमे अरहतस्स सिज्झ-धम्मे भगवदो विज्झर महा विज्झर पोमे पोमे महापोमे महापोमेश्वरी स्वाहा ।

विधि— इस मत्र को १०८ बार तीनो संध्याकाल में जाप्य करने से लक्ष्मी सम्पत्ति की वृद्धि होती है । (पद्मप्रभ अनाहत) यत्र को पूर्वोक्त कोई भी धातु के पत्रे पर खुदवाकर प्राण प्रतिष्ठा करें, फिर यंत्र के ऊपर पद्मप्रभ भगवान की मूर्ति स्थापित करके पचामृताभिषेक पूजा करके १०८ बार मत्र का जाप्य पुष्पो से करे तो सिद्ध होगा ।

श्री पद्म प्रभ अनाहत
यंत्र नं-६

श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकर अनाहत यंत्र मंत्र विधि

मंत्रः--
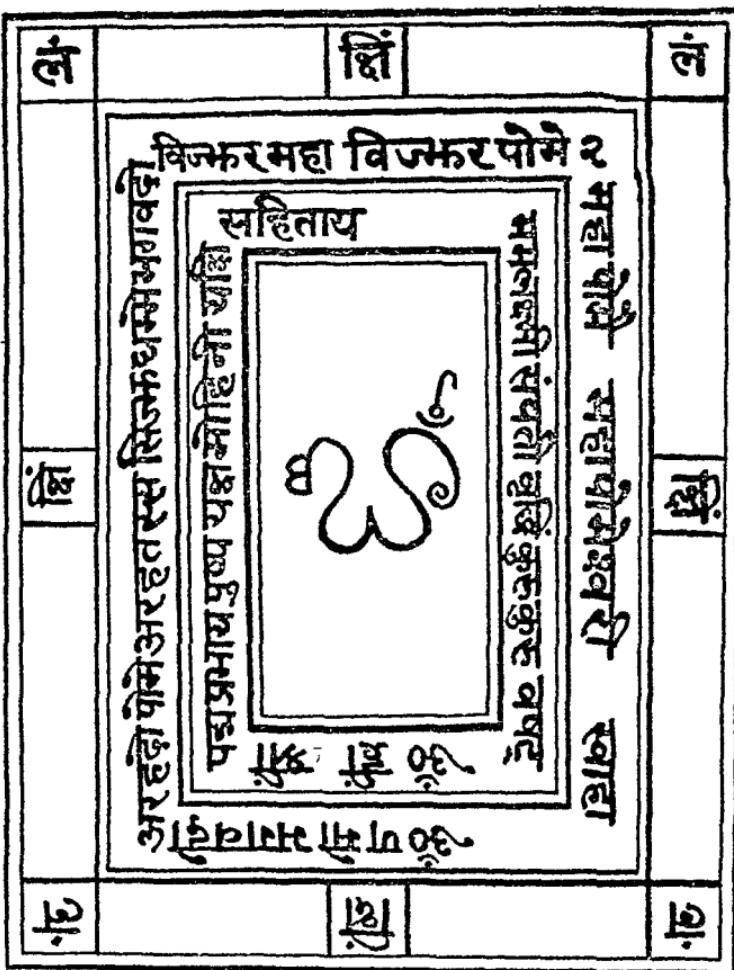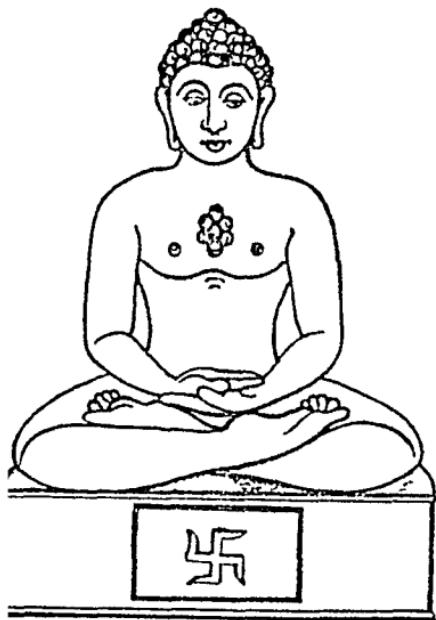
ॐ णमो भगवदो अरहदो सुपारिसस्स सिज्झ-धम्मे भगवदो विज्झर हंसे सुपासि सुमतिपासे स्वाहा ।

विधि-- इस मत्र को १०८ बार जाप्य करने से सर्व वृश्चिक भय का नाश होता है। मत्र सिद्धि क्रम उपरोक्त प्रकार से ही है।

श्रीसुपार्श्वनाथ अनाहत यंत्र नं-७
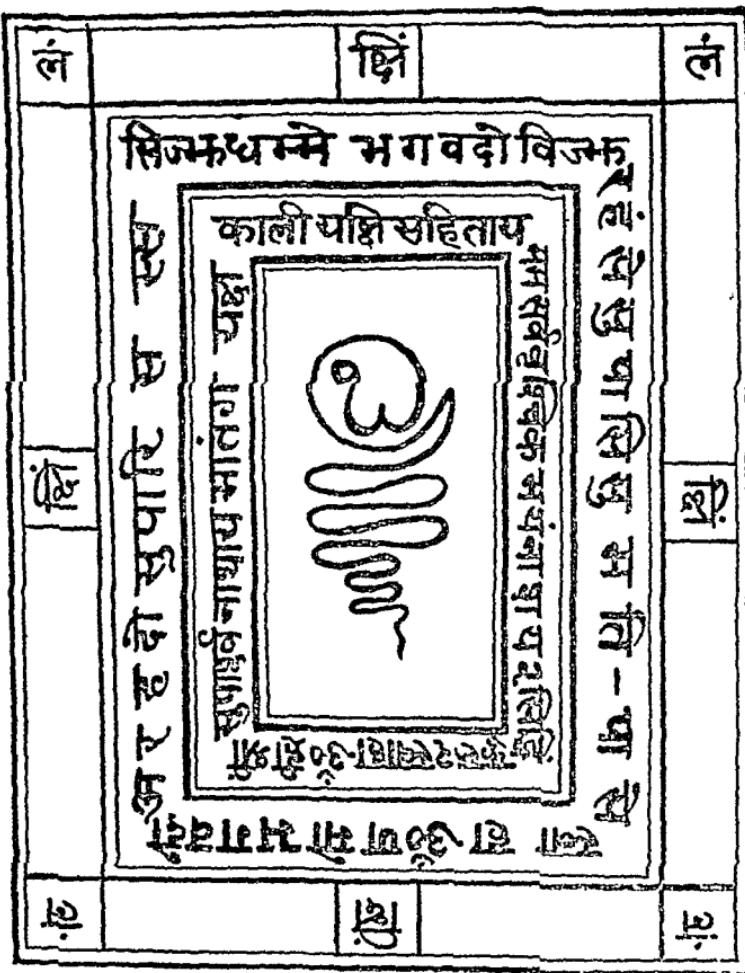
श्री चन्द्रप्रभ तीर्थंकर अनाहत यंत्र मंत्र विधि

मंत्र:—

ॐ णमो भगवदो अरहदो चन्दप्पहस्स सिज्झ–धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर चंदे चंदप्पहस्सपूर्व स्वाहा ।

विधि— इस मत्र को १०८ बार पानी मत्रित कर मुख प्रक्षालन करने से स्त्रि पुरुष वश मे होते हैं । (चन्द्रप्रभ अनाहत) यत्रसिद्ध करने की रीति पहले के समान ही है । मात्र पुष्प यहा शुक्ल वर्ण के हो ।

श्री चन्द्रप्रभ अनाहत
यंत्र न-८
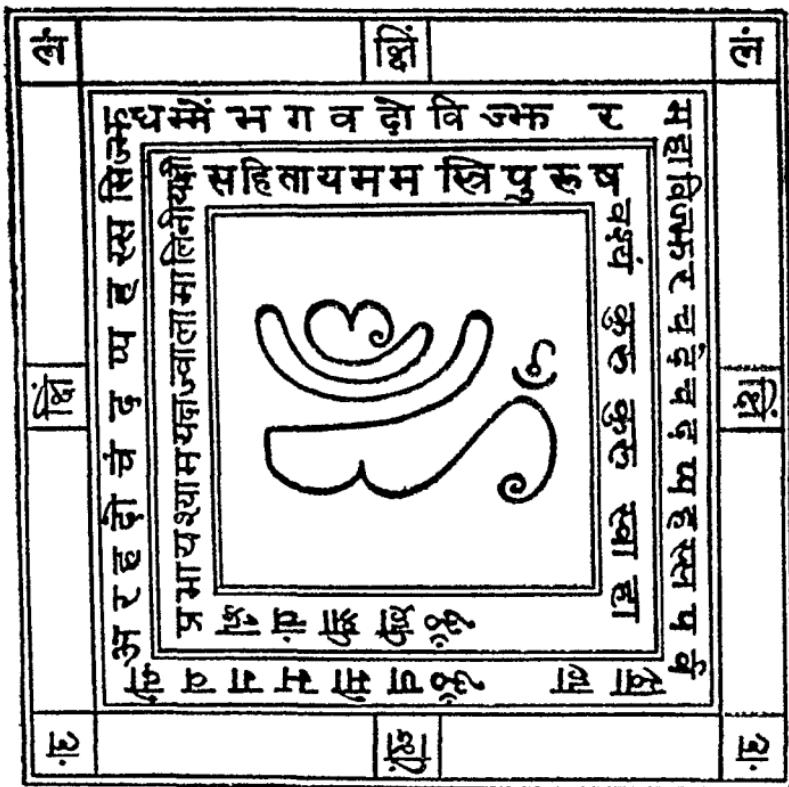
श्री पुष्पदंत तीर्थंकर अनाहत यंत्र मंत्र विधि
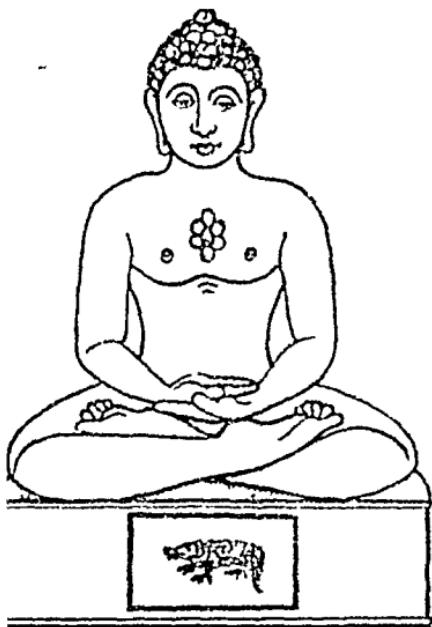
मन्त्रः--

ॐ णमो भगवदो अरहदो पुष्पदंतस्स सिज्झ-धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर-पुप्फे पुप्फेसरि सुरि स्वाहा ।

विधि— इस मत्र को १०८ बार जप कर पानी मत्रित करे। उस पानी से मुख प्रक्षालन करने से अचिन्त्य फल की प्राप्ति होती है। (पुष्पदत अनाहत) सब विधि प्रथम यत्र के समान ही समझना।

अनाहत मत्र का १०८ बार जाप्य करना।

श्री पुष्पदंत नाथ अनाहत

यंत्र नं-९

ॐ णमो भगवदो अर

वषट् ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत

ॐ
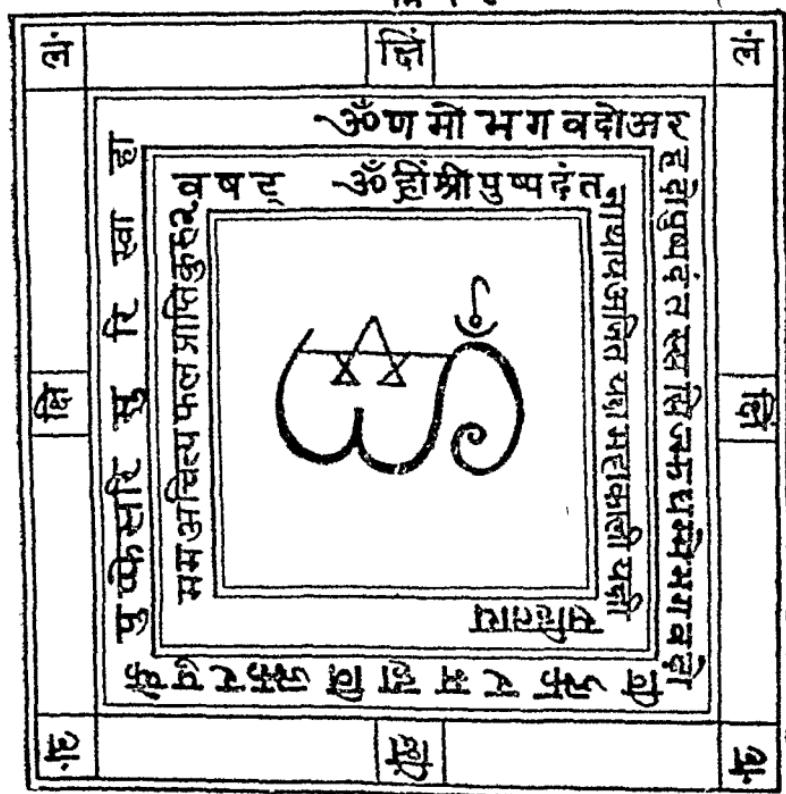
श्री शीतलनाथ तीर्थंकर अनाहत यन्त्र मंत्र विधि
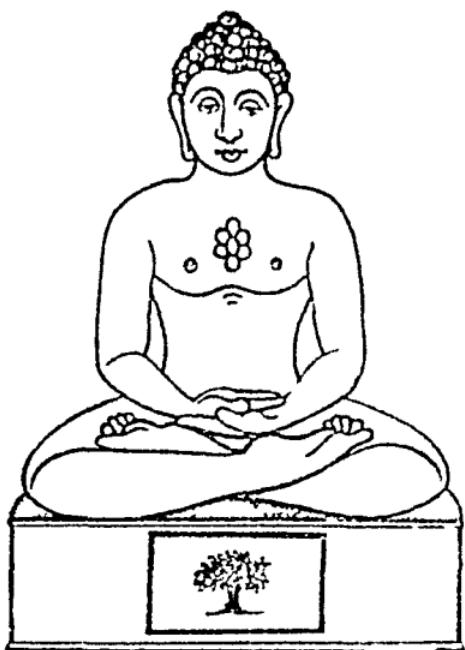
मन्त्रः--

ॐ णमो भगवदो अरहदो शीतलस्स अनाहत विज्भा विज्भारइ सिज्भ-धम्मे भगवदो महा विज्भर महा-विज्भ शीयलस्स सिवो सस्सि अणुमहि अणुमाणमो भगवदो नमो नमः स्वाहा।

विधि— इस मत्र को १०८ बार पानी मन्त्रित कर मुख प्रक्षालन करने से सर्व प्रकार की पिशाच वृत्ति का भय नाश होता है। यत्र लेखन प्रतिष्ठा आदि पूर्वोक्त जानना।

श्री शीतलनाथ अनाहत
यंत्र नं-१०
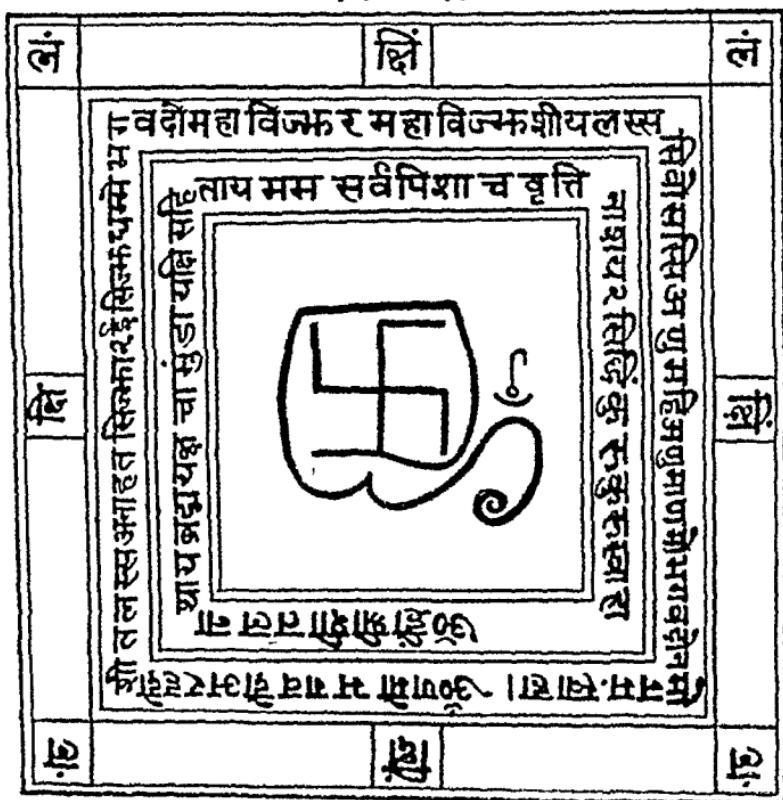
श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकर अनाहत यंत्र मंत्र विधि
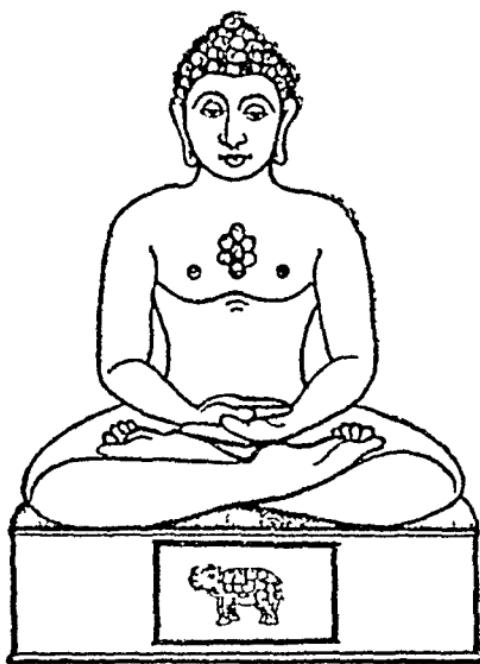
मन्त्रः—

ॐ णमो भगवदो अरहदो श्रेयास सिज्झि-धम्मे भगवदो विज्झर महा-विज्झर श्रेयासकरे भयंकरे स्वाहा ।

विधि— इस मत्र को १०८ बार जाप्य करने से चतुष्पदों का रक्षण होता है। यंत्र मत्र लेखन प्राण प्रतिष्ठा पूर्वोक्त रूप से करना चाहिये ।

श्री श्रेयांस नाथ अनाहत
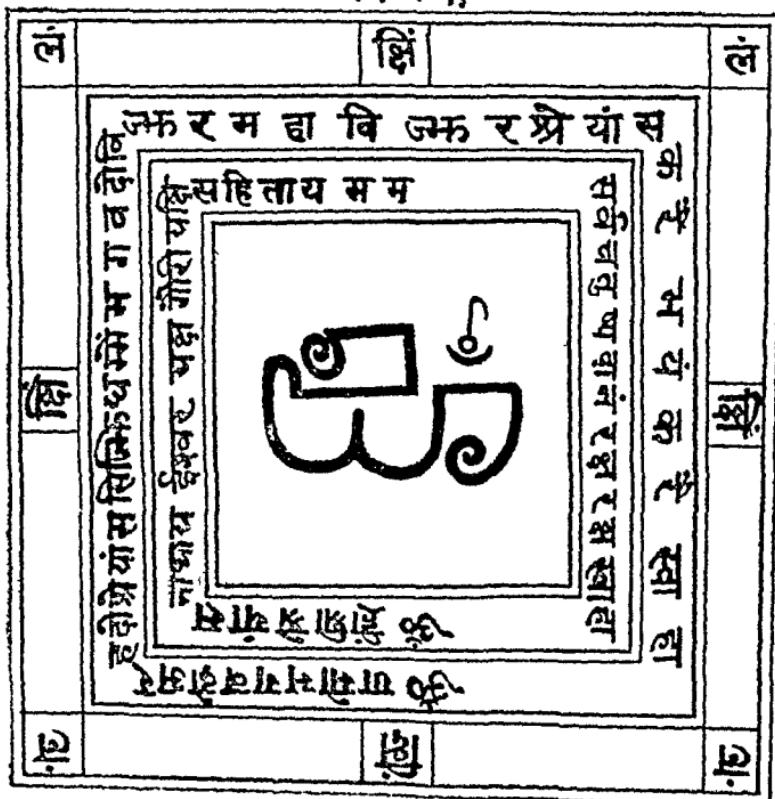
यंत्र नं-११

श्री वासुपूज्य तीर्थंकर अनाहत यंत्र मंत्र विधि

मंत्रः--

ॐ णमो भगवदो अरहदो वासुपूज्य सिज्झ धम्मेभगवदो विज्झर महा-विज्झर पुज्जे महापुज्जे पुज्जायै स्वाहा।

विधि— इस मत्र का ध्यान करने से सर्व कार्य सिद्ध होता है (वासुपूज्य अनाहत)

यंत्र लेखन विधि प्राण प्रतिष्ठा आदि पूर्वोक्त ही है।

श्री वासुपूज्य नाथ अनाहत
यंत्र नं-१२
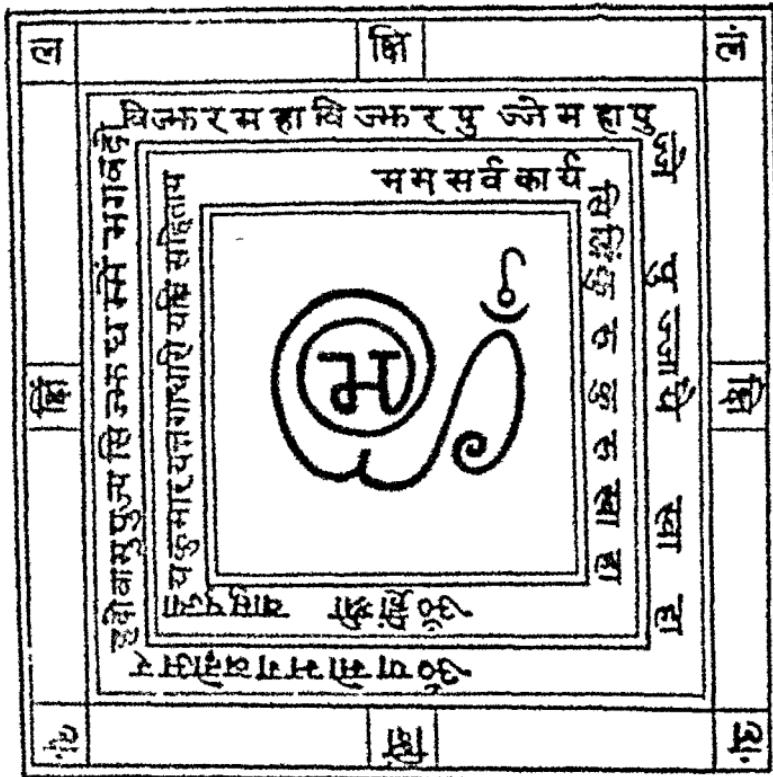
श्री विमलनाथ तीर्थंकर अनाहत यंत्र मंत्र विधि

मंत्रः--
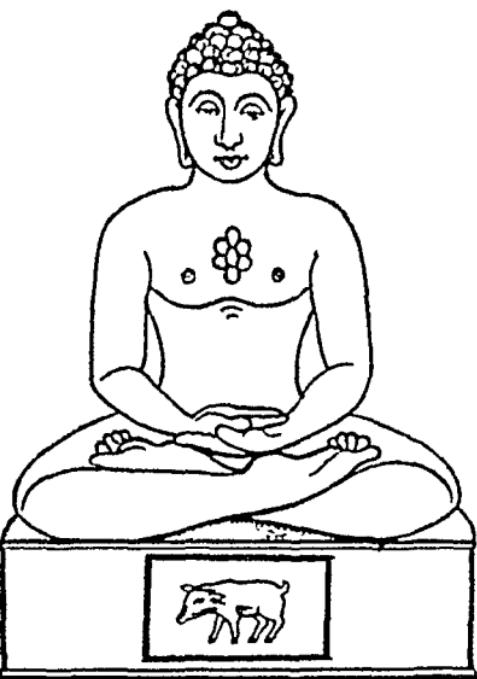
ॐ णमो भगवदो अरहदो विमलस्स सिज्झ-धम्मे भगवदो विज्झर महा॰ विज्झर अमले विमले कमले निम्मले स्वाहा ।

विधि— इस मत्र को १०८ बार जाप्य करने से तुष्टि और पुष्टि होती है।

यत्र मत्र प्राण प्रतिष्ठा आदि पूर्वोक्त ही जानना चाहिये ।

श्री विमल नाथ अनाहत यंत्र नं-१३
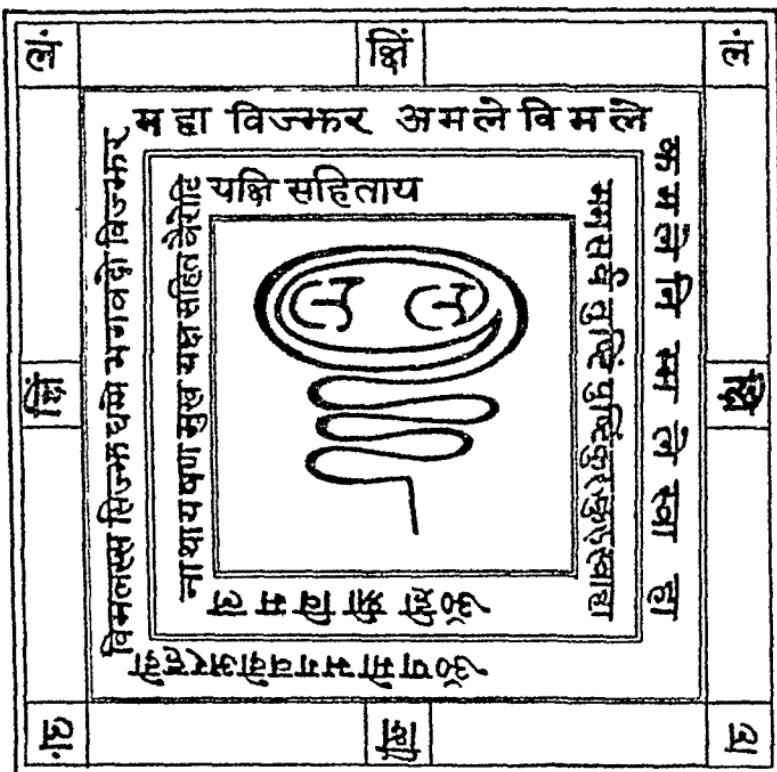
श्री अनन्तनाथ तीर्थंकर अनाहत यंत्र मंत्र विधि
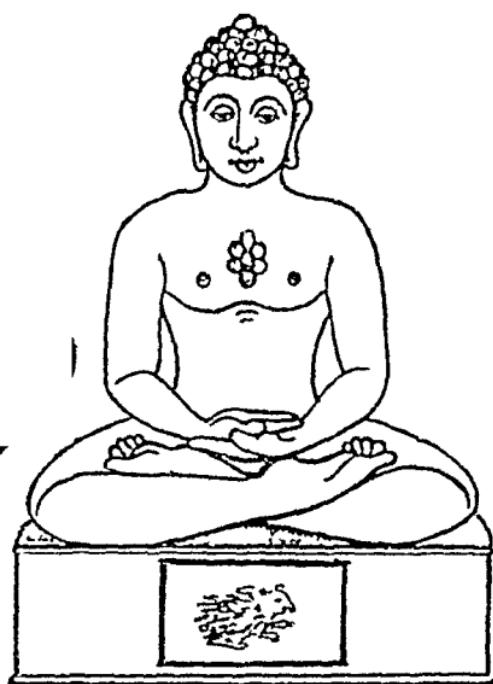
मंत्रः--

ॐ णमो भगवदो अरहदो अणंत सिज्झ-धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर अणते अणंतणाणे अणंत केवल णाणे अणंत केवल दसणे अणु पुज्जवासणे अणतागम कैवलियै स्वाहा।

विधि— इस मत्र को जप करने से सर्व इन्द्रिय जनित सुख मिलता है। और परम्परा से मोक्ष भी मिलता है। बाकी सब विधि पूर्वोक्त ही जानना चाहिये। मात्र पुष्प शुक्ल होना चाहिये।

श्रीअनन्तनाथअनाहत
यंत्र नं-१४

श्री धर्मनाथ तीर्थंकर अनाहत यंत्र मंत्र विधि

मंत्रः--

ॐ णमो भगवदो अरहदो धम्मस्स सिज्झ धम्मे भगवदो विज्झर महा-विज्झर धम्मे सुधर्मेण धम्माइं वा सुहते भंते-धम्मे अंगमे मं–मेवु अपदि दम्मे स्वाहा।
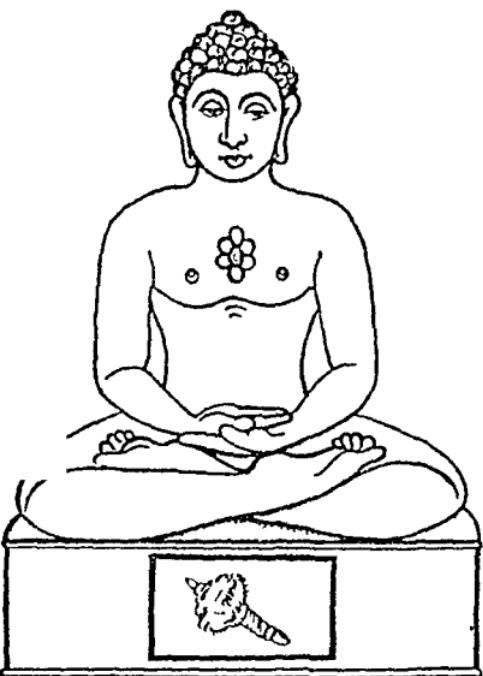
विधि— इस मत्र से १०८ बार ताम्बुल मत्रित कर खिलाने से सर्व वश्य होते है। (धर्मनाथ अनाहत) शेष पूर्वोक्त जानना।

श्री धर्मनाथ अनाहत
यंत्र नं-१५
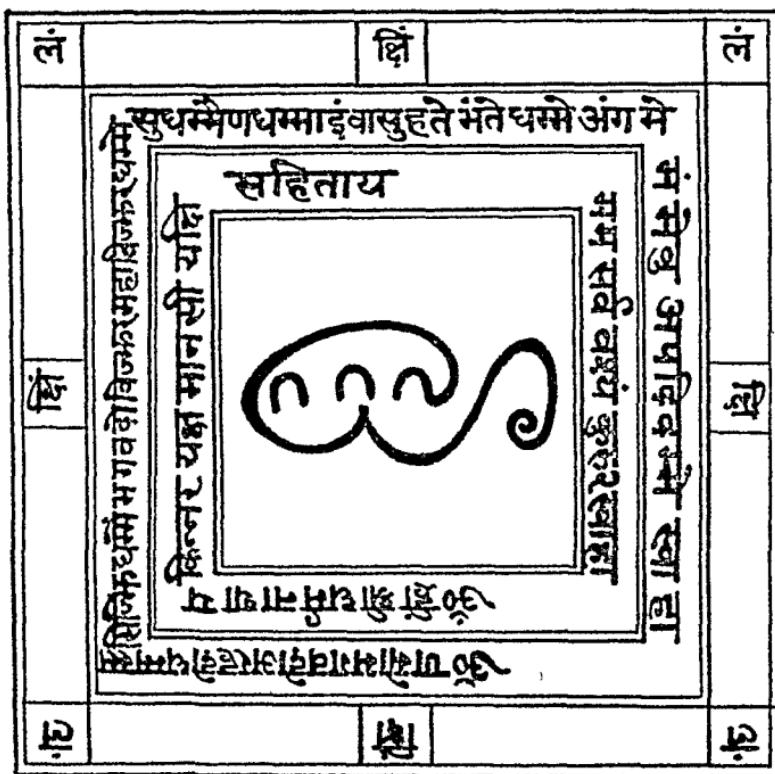
श्री शान्तिनाथ तीर्थंकर अनाहत यंत्र मंत्र विधि

मंत्रः—
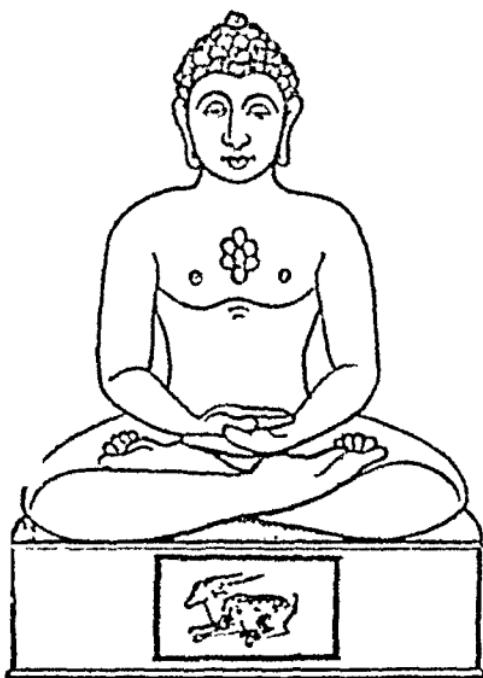
ॐ णमो भगवदो अरहदो शांतिस्स सिज्झ धम्मे भगवदो विज्झा महाविज्झा शान्तिहूकम्पमे स्वाहा ।

विधि— इस मंत्र को १०८ वार जप करने से सर्व शाति होती है। शेष पूर्वोक्त जानना ।

श्री शांतिनाथ अनाहत
यंत्र नं-१६
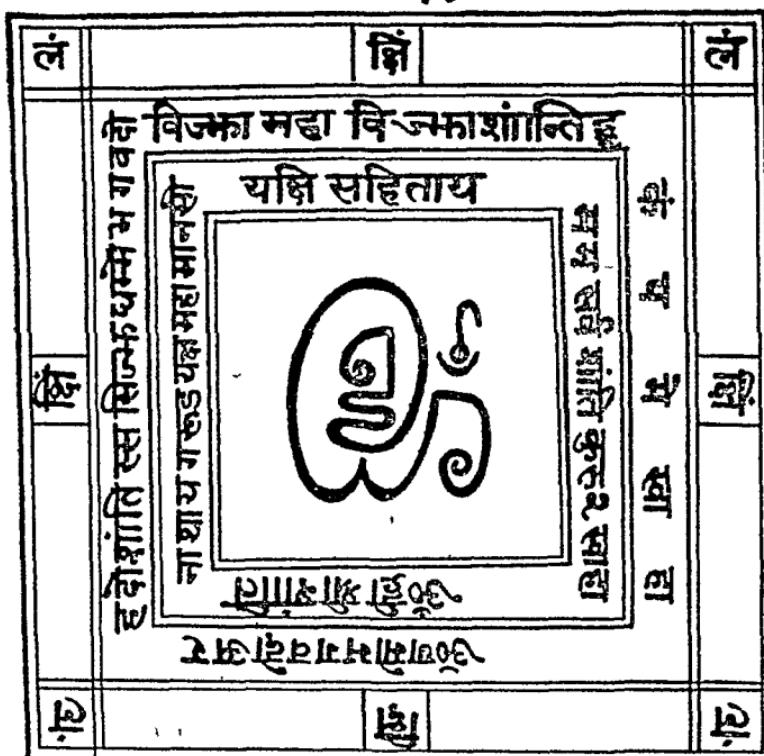
श्री कुन्थुनाथ तीर्थंकर अनाहत यंत्र मंत्र विधि

मंत्रः—
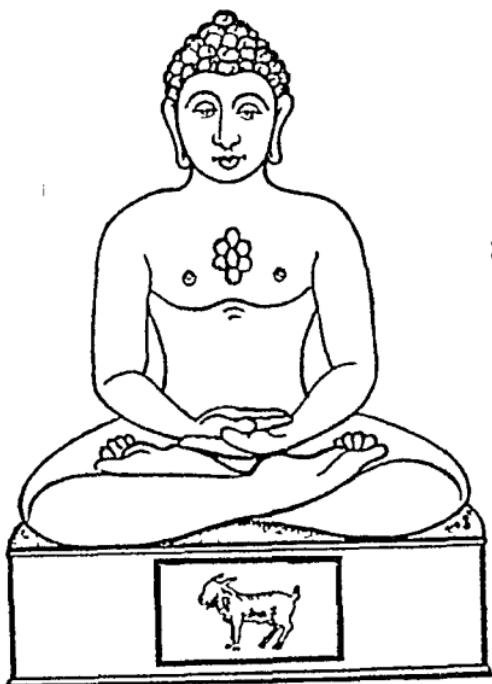
ॐ णमो भगवदो अरहदो कुन्थुस्स सिज्झ-धम्मै भगवदो विज्झर महाविज्झर कुन्थु कुन्थु कै कुन्थुशे स्वाहा।

विधि-- इस मत्र को १०८ बार जाप्य करने से बिच्छु मधुमक्खी, खटमल, मच्छर आदि जीवो का उपद्रव नही होता है। (कुन्थु जिन अनाहत) शेष पूर्वोक्त जानना।

श्री कुन्थुनाथ अनाहत
यंत्र नं-१७

श्री अरहनाथ तीर्थंकर अनाहत यंत्र मंत्र विधि

मंत्रः--

ॐ णमो भगवदो अरहदो अरहस्स सिज्झ--धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर अरणे अपजि ग्रहति स्वाहा।

विधि— इस मत्र का १०८ बार जाप्य करने से जुआ आदि में जय प्राप्त होती है। शेष विधि पूर्वोक्त ही है।

श्रीअरह नाथअनाहत
यंत्र नं-१८

श्री मल्लिनाथ तीर्थंकर अनाहत यंत्र मंत्र विधि

मंत्रः--

ॐ णमो भगवदो अरहदो मल्लिस्स सिज्झ धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर मल्लि-मल्लि अरिपायस्स मल्लि स्वाहा ।

विधि— इस मन्त्र का १०८ बार जाप्य करने से चिन्तित कार्य की सिद्धि होती है । शेष पूर्वोक्त जानना ।

श्री मल्लिनाथ अनाहत
यंत्र नं-१९
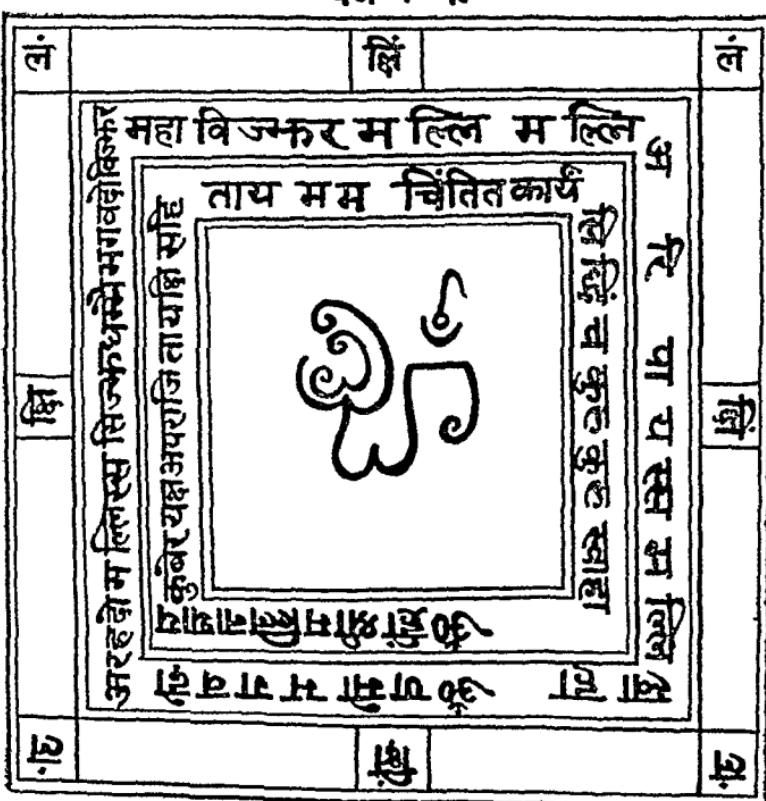
श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर अनाहत यंत्र मंत्र विधि

मंत्रः—
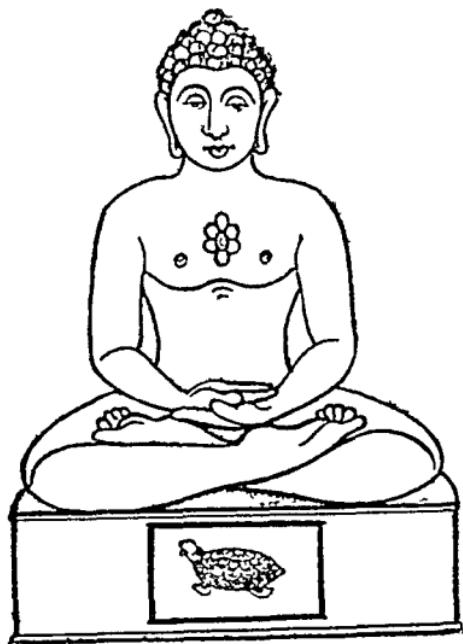
ॐ णमो भगवदो अरहदो मुनिसुवयस्स सिज्झ-धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर सुब्बिदेतद्द्वद्दे स्वाहा ।

विधि— इस मत्र को स्मरण करने से द्विपद चतुष्पद वशी होते है ।
शेष क्रिया पूर्वोक्त जानना ।

श्रीमुनिसुव्रतनाथअनाहत
यंत्र नं-२०
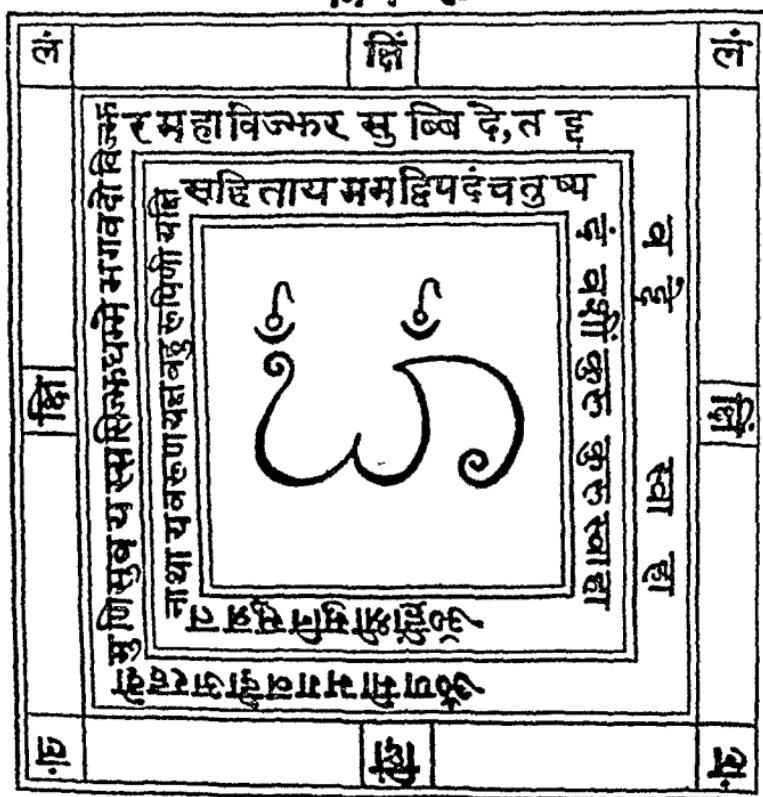
श्री नमिनाथ तीर्थंकर अनाहत यंत्र मंत्र विधि

मंत्र:—
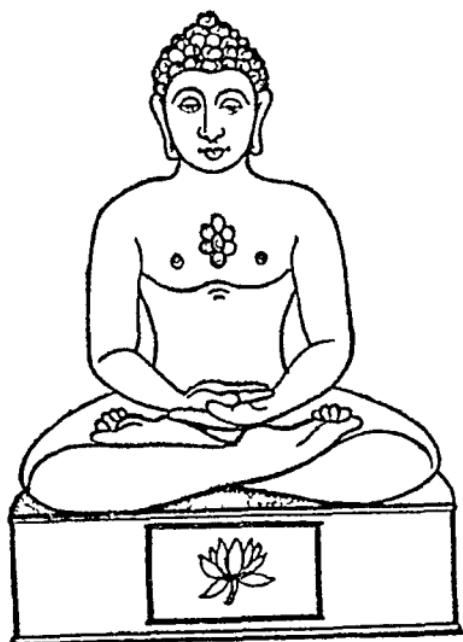
ॐ णमो भगवदो अरहदो णमिस्स सिज्झ-धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर णमि णमि स्वाहा ।

विधि— इस मंत्र से पुष्प अथवा ताम्बुल (पान) मन्त्रित कर जिसको भी दिया जाय वह वश मे रहेगा ।

मत्र सिद्धि का पूर्वोक्त सब क्रिया जानना ।

श्री नमिनाथ अनाहत
यंत्र नं-२१

श्री नेमिनाथ तीर्थंकर अनाहत यंत्र मंत्र विधि

मंत्रः--
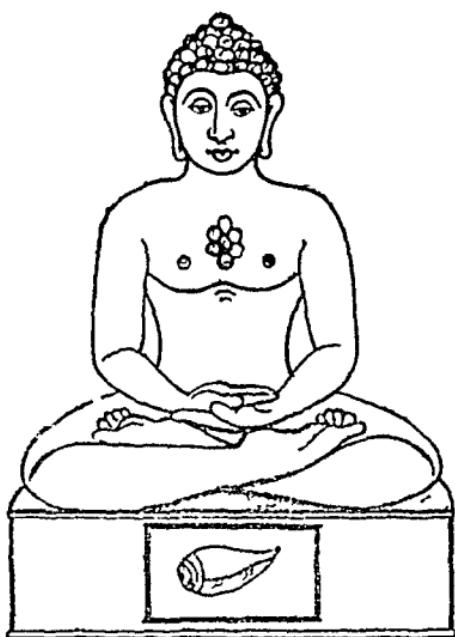
ॐ णमो भगवदो अरहदो अरिट्ठ णेमिस्स सिज्झ-धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर सम्मति महारति अरति ददिरसति महंति स्वाहा ।

विधि— इस मत्र का जाप्य करने से शत्रु के हाथ में रहता हुआ शस्त्र नीचे गिर जाता है। (नेमीनाथ अनाहत)

सिद्ध करने की रीति पूर्वोक्त जानना ।

श्री नेमि नाथ अनाहत
यंत्र नं-२२
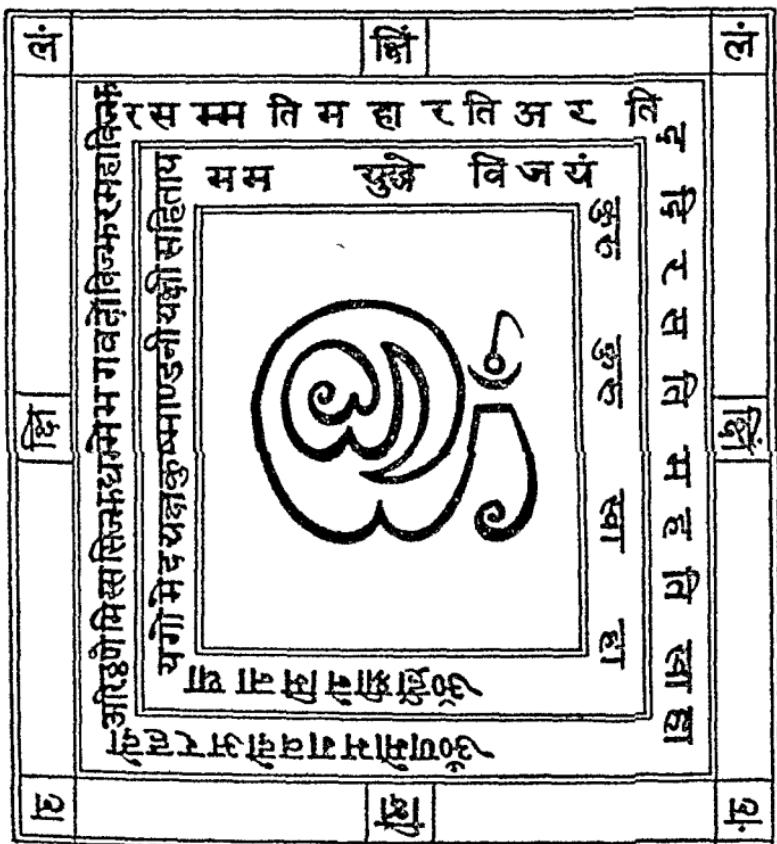
श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकर अनाहत यंत्र मंत्र विधि

मंत्रः—

ॐ णमो भगवदो अरहदो उरगकुल जासु पासु सिज्झ-धम्मे भगवदो विज्झर वुग्गै महावुग्गै सेपासै संमास सनिगितोदि स्वाहा।

विधि— इस मत्र से पुष्प अथवा ताम्बुल मत्रित करके देने से आरोग्यता प्राप्त होती है। (पार्श्वनाथ अनाहत) शेष विधि पूर्वोक्त जानना।

श्री पार्श्वनाथ अनाहत

यंत्र नं-२३

श्री महावीर तीर्थंकर अनाहत यंत्र मंत्र विधि

मंत्रः--
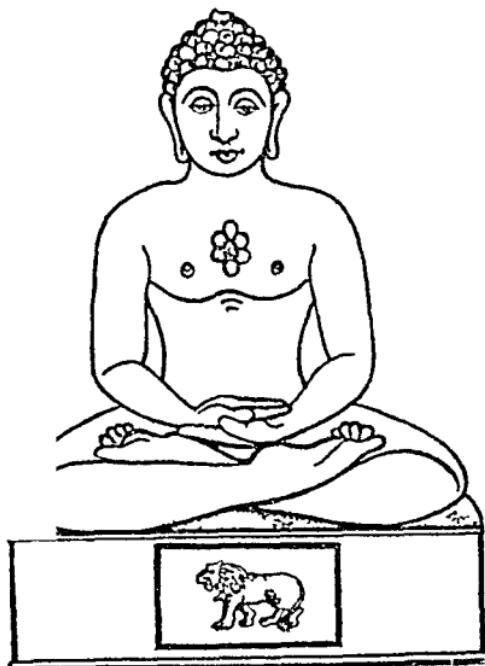
ॐ णमो भगवदो अरहदो महन्दि महावीर वड्ढमाण बुद्धस्स अणाहत विज्झाइ सिज्झ धम्मै भगवदो महा-विज्झ महाविज्झ वीर महा-वीर सिरिसणमदिवीर जयतां अपराजिते स्वाहा।

विधि – इस मत्र को जपने से युद्ध भूमि मे युद्ध करने के लिये आया शत्रु, साधक के आधीन हो जाता है और शत्रु सेना से जीत हो जाती है।

श्रीमहावीर अनाहत
यंत्र नं-२४

द्वितीय मंत्र

मन्त्रः-- ॐ णमो भगवदो अरिट्ठणेमिस्स अरिट्ठेण बंधेण बंधयामि रक्कसाणं भूयाणं खेयराणं डाइणीण चौराणं साइणीणं डायिणीणं महोरगाणं जेक्केवि दुट्ठा संभवंति तेसिं सव्वेसि मणो मुहं गईदिट्ठि बधेण बंधामि धणु धणु महाधणु महाधणु जः जः जः ठ ठ ठ वषट घे घे हूँ फट् स्वाहा ।

चतुर्विशंति अनाहत याने २४ तीर्थंकर बिम्ब के नीचे स्थापना करने का यंत्र इति ।

प्रथम सकलीकरण नित्य नैमितिक विधि को करें। फिर

श्लोक : ॐ जीवानां बहु जीवनप्रायैः जीवन समदक्षे।

यो नागार्जुन यंत्रं यजते किं कुर्वते हितस्य वचनागाः।

मंत्रः— ॐ ह्लां ह्लि ह्लूं ह्लौं ह्लः भ वं ह्वः पः हः प, क्षी, प, देवदत्तस्य सर्वोपद्रव शांति कुरू कुरू स्वाहा पारिस— प्रभवे निर्वपामि स्वाहा।

चंद्रप्रभ शोभा गुणयुक्त्यै। चदन के चदन रवि मिश्रे।
यो नागार्जुन यत्रं ... ...
ॐ ह्ला ह्ली ह्लूं ह्लौं हः ... .. गंधं।
अक्षत पुंजे जिनवर पद पंकजा सुकृत पुंजैरिव द्विरंजै
यजते। यो नागार्जुन यंत्रं यजते ... ...
ॐ ह्लां ह्ली ह्लूं ह्लौं ह्लः ... ... अक्षतान्
पुष्पै कलि कुल कलि सद्यः। भव्यै चंपक जातिकैः।
यो नागार्जुन यंत्रं ... ...
ॐ ह्ला ह्ली ह्लूं ह्लौं ह्लः ... ... पुष्पं।
हव्यै हर्ष करै रसनाना। नानाविध प्रिय मो।

यो नागार्जुन ... ...

ॐ ... .. चरूं

दीपैर्दिप्रकरैर्वरबुद्धैं । र्दाह कर्मरिग माकवि खंडे ।

यो नागार्जुन ... ...

ॐ ह्रां .. दीपं

धो प्यैर्धोपज कैद लैश्च, घ्राण घ्रीणनकै, परमार्ग्यैं ।

यो नागा ... ...

ॐ ह्रां ... .. धूपं

चोचक मोचक चौतक पुगैं । रामल काद्यैर्गंध फलेश्च ।

यो नागार्जुन ... ...

ॐ ... ... फलं

अंबुश्चन्दन शालिज पुष्पै र्हव्यैः दीपक धूप फलाद्यै ।

मो नागार्जुन . ..

ॐ ... ... अर्घ्यं

दुष्टव्याला करामृतये पतिर निश तन व्ये कि करोति ।

योद्रा यंत्र मेवं प्रवर गुण युत पूज येन प्रसिद्धिः ।

शाकि न्याद्य प्रदोक्षा ग्रह कृत सकलानि क्षणान्

संक्षयंति ।

श्री मत्जैनागमेनं प्रकट मति प्रोक्तमैवं विदंच ।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसाय स्वाहा पः

स्वीश्री

निलंस अमुकस्स देवदत्तस्य ग्रहोच्चाटनं कुरु कुरु क्षैम. स्वाहा ।

इसके बाद पार्श्वनाथ स्तोत्र करके, (श्रीमद् देवेन्द्र वृंदा) इत्यादि पढकर पार्श्वनाथ पूजा की जयमाला पढ़े ।

इस यंत्र को सोना, चादी, अथवा तांबे के पत्रे पर खुदवाकर प्राण प्रतिष्ठा करे फिर यंत्र के ऊपर पार्श्वनाथ प्रभु की मूर्ति स्थापन करके पंचामृताभिषेक करे फिर उपरोक्त पूजा अष्ट द्रव्यार्चना करे । स्तोत्र, जयमालादि पढकर विसर्जन करे । धरणेन्द्र पद्मावती की षोडशोपचार विधि को करने से सिद्ध होता है ।

यंत्र प्राण प्रतिष्ठा मंत्र

मंत्रः— ॐ अं क्रों ह्रीं असि आउसा य र ल व श ष स ह अमुष्य प्राण इहप्राण अमुष्य जीवा इहस्थिता अमुष्य यंत्र, मन्त्र, तन्त्रस्यसर्वेन्द्रियाणि काय वाङ्मन् चक्षु श्रोत्र घ्राण प्राण देवदत्तस्य इहैवायन्तु अहं अत्र सुखं चिरंतिष्ठंतु स्वाहा।

नागार्जुन ६ यन्त्रो की लेखनविधि और प्राण प्रतिष्ठा विधि, सिद्ध करने की विधि सर्व यन्त्रों के समान है। पहले प्रत्येक यन्त्र को सिद्ध कर लेवे पश्चात् जिस यन्त्र की जैसी विधि बतलाई है उसी के अनुसार पूजा विधान कर कार्य करे अवश्य सफलता मिलेगी। यन्त्रो को प्रतिष्ठित करने के लिये प्राण प्रतिष्ठा मन्त्र भी ऊपर दे दिया है।

यह चतुर्विंशति तीर्थंकर यन्त्र मन्त्र विधि कन्नड भाषा से हिन्दी भाषा मे पूर्ण हुई। सं० २०३८ पौष कृष्णा १० रविवार ता० २०-१२-८१ को दक्षिण कर्नाटक तुमकुर जिला क्षेत्र मन्दारगिरी अतिशय क्षेत्र चन्द्रप्रभु सन्मुख बैठकर पूर्ण किया। श्री १०८ आचार्य श्री समाधि सम्राट अष्टादश भाषाविज्ञ कठोर तपस्वी श्री महावीर कीर्ति जी के परम-शिष्य श्री १०८ गणधराचार्य कुन्थुसागर जी ने।

नागार्जुन यंत्र

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ
ठ	ड	ढ	ण	त	थ्र	द्र	ह्रैं
ट	स	ह्र	ल	क्ष्र	ॐ	ध	ह्रैं
ञ	ष	४	५	२	०	न	फ्र
ज्ञ	श्री	३	दैव	ह्र	तं	प	फ्रैं
ज	ब	८	९	न्र	०	फ	ह्रैं
छ्	ल	र	थ्र	म्र	भ्र	ख्र	ह्रैं
च	ङं	घ	ग	ग्र	क्ष	अः	ह्रैं

नवग्रह यत्र चिन्तामणि १

२	७	६	३	५	१	९	४	८
३	५	१	९	४	८	२	७	६
९	४	८	२	७	६	३	५	१
६	२	७	१	३	५	८	९	४
१	३	५	८	९	४	६	२	७
८	९	४	६	२	७	१	३	५
७	६	२	५	१	३	४	८	९
५	१	३	४	८	९	७	६	२
४	८	९	७	६	२	५	१	३

नवग्रह यंत्र नं० २

इस यत्र को पत्रे पर अथवा भोजपत्र पर सुगन्धित द्रव्यो से लिखकर यंत्र प्रतिष्ठत करके पार्श्वनाथ भगवान के सामने यत्र आराधना करे फिर यत्र को गले मे या हाथ मे वाधे तो क्षुद्रग्रह दुष्ट व्यतरादिक वोलते है ।

क	क	क	क	क	क	क	क
लि	लि	लि	लि	लि	लि	लि	लि
स	स	स	स	स	स	स	स
ब	ब	ब	ब	व	ब	ब	ब
व	व	व	व	व	व	व	व
य	य	य	य	य	य	य	य
र	र	र	र	र	र	र	र
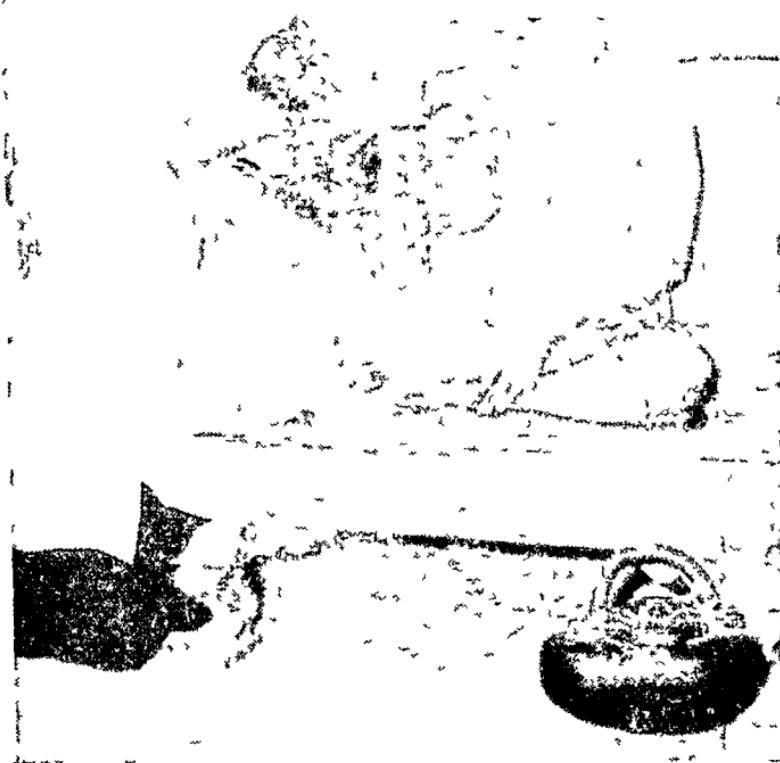
भारत गौरव परम पूज्य श्री १०८ आचार्यरत्न देशभूषणजी महाराज से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए गुरुभक्त प्रकाशन सयोजक शान्तिकुमार गगवाल ।

निमित्त ज्ञान शिरोमणि श्री १०८ आचार्यरत्न
विमलसागरजी महाराज से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए
प्रकाशन सयोजक शान्तिकुमार गगवाल

लघुविद्यानुवाद

(यंत्र-मंत्र-तंत्र विद्या का एकमात्र संदर्भ ग्रन्थ)

ग्रन्थमाला समिति द्वारा भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक के पावन पुनीत अवसर पर लघुविद्यानुवाद (यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र विद्या का एकमात्र सदर्भ ग्रन्थ का प्रकाशन करवाया गया। इसका विमोचन चामुण्डराय मण्डप मे दिनाक २४-२-८१ को निमित्तज्ञान शिरोमणि श्री १०८ आचार्य विमलसागरजी महाराज साहब के कर कमलो द्वारा हुआ था। समारोह मे दिगम्बर जैनाचार्य, मुनिगण, आर्यिकाए, क्षुल्लक-क्षुल्लिकाए व गणमान्य श्रावक मन्च पर काफी सख्या मे उपस्थित थे। स्वस्ति श्री पट्टाचार्य चारुकीर्तिजी भट्टारक स्वामीजी व श्री पट्टाचाय लक्ष्मीसेनजी भट्टारक स्वामीजी भी मौजूद थे। समाज के गणमान्य व्यक्तियो मे साहू श्री श्रेयासप्रसादजी जैन सर सेठ भागचन्दजी सोनी, श्री त्रिलोकचन्दजी कोठारी, श्री पूनम चन्दजी गगवाल (झरियावाले) श्री पन्नालालजी सेठी, श्री निर्मल कुमारजी सेठी आदि के नाम प्रमुख है। चामुन्डराय मण्डप खचाखच नर-नारियो से भरा हुआ था। यह ग्रन्थ करीव सात सौ पृष्ठो का दुर्लभ रगीन चित्रो, यत्रो-मन्त्रो तथा अनेक कष्ट निवारक व ऋद्धि सिद्धि दायक सामग्री का आकर्षक आवरण पृष्ठ व सुन्दर डिजाइन मे प्लास्टिक कवर के साथ यह सन् १९८१ का महत्वपूर्ण प्रकाशन है। इतना सरल सुगम सामान्य भाषा मे प्रस्तुतीकरण जनसामान्य के लिये आज तक किसी ग्रन्थ मे एक साथ उपलब्ध नही था। ग्रन्थ मे प्रकाशित सामग्री परम पूज्य श्री १०८ गणधराचार्य कुन्थुसागरजी महाराज साहब व परमपूज्य श्री गणिनी १०५ आर्यिका विजयमती माताजी ने बहुत ही कठिन परिश्रम से सकलन किया है।

कुन्थु विजय ग्रंथ माला समिति द्वारा प्रथम प्रकाशन लघुविद्यानुवाद ग्रंथ के बारे मे सम्मतियां

श्री १०८ आचार्य स्थिवर सम्भवसागरजी महाराज

परम पूज्य चारित्र चक्रवर्ति सिद्धान्तवेत्ता सिद्धक्षेत्र वदना भक्त शिरोमणि स्वर्गीय श्री १०८ आचार्य महावीर कीर्तिजी महाराज जी ने बहुत परिश्रम करके इस विद्यानुवाद को लिखी थी। आपके समाधि मरण के बाद गुरु की यह कृति लाखो नर-नारियो को अनेको सकटो से बचने के लिए धर्म ध्यानपूवक जीवन बिताने के लिए सहायक बने, इस दृष्टि से आचार्य कुन्थुसागर एव गणिनी आर्यिका विजयमति माताजी ने इस ग्रथ को प्रकाश मे लाकर महान उपकार किया है।

इस विद्यानुवाद मे सात सौ लघुविद्या, पाच सौ महाविद्याओ का वर्णन है। आठो महानिमित्तो का वर्णन है। इसकी पद सख्या एक करोड दस लाख है। धर्म प्रचार की भावना से इस ग्रथ को छपाकर महान पुण्य के भागी श्री शान्ति कुमार गगवाल को हमारा शुभाशीर्वाद है कि आपकी इस सधर्म की भावना बढती रहे।

स्वस्ति श्री पट्टाचार्य चारु कीर्ति जी भट्टारक स्वामीजी

हमे आपका भेजा हुआ लघुविद्यानुवाद ग्र थ प्राप्त करके प्रसन्नता है। हमने इसका अवलोकन किया और पाया कि हमारे स्वाध्याय लाइब्रेरी मे रखना उपयोगी है। आपका यह अच्छा ग्र थ हमारे रोजाना के स्वाध्याय मे काम आ रहा है। ग्र थमाला समिति प्रसशा की पात्र है और हम आपको और भी अधिक धार्मिक सेवाओ के लिए आशिर्वाद देते है।

श्री पन्नालालजी साहित्याचार्य पी एच. डी. प्राचार्य गणेश दिगम्बर जैन संस्कृत महाविद्यालय सागर, कटरा बाजार सागर म. प्र.।

लघुविद्यानुवाद यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र का अच्छा ग्रथ है। इसके सकलन मे अच्छा श्रम किया गया है। प्रकाशन भी सुन्दर हुआ है। आशा है यन्त्र मन्त्र अभ्यासी जन इससे लाभ उठायेगे।

पण्डित साहब श्री सुमेरचन्दजी दिवाकर सिवनी [म. प्र.]

लघु विद्यानुवाद ग्रथ रत्न प्राप्ति से वहुत हर्ष हुआ। इसके प्रकाशन आदि कार्यो मे सहयोगियो का वडा उपकार है। सवको धन्यवाद है। धर्म कार्यो मे खूव उत्साह धारण करते रहे।

डा दामोदर शास्त्री व्याकरणचार्य, सर्वदर्शनाचाय, जैन दर्शनाचाय, एम ए. (सस्कृत, हिन्दी, प्राकृत व जैन शास्त्र। विद्यावारिधि पी एच डी। प्राध्यापक एव अध्यक्ष जैन दर्शन विभाग, लालवहादुर शास्त्री केन्द्रीय सरकृत विद्यापीठ नई दिल्ली।

लघुविद्यानुवाद ग्रथ परमोपयोगी व ज्ञानवधन है। आपका प्रयास सभी प्रकार से स्तुत्य है।

डा. प्रो. अक्षय कुमार जी जैन, [इन्दौर] एम ए, (हिन्दी सस्कृत), एफ। जे पी एच. साहित्य, आयुर्वेद, धर्मरत्न सिद्धान्त शास्त्री, सम्पादन कला विशारद एम पी फलित ज्योतिष विशेपज्ञ।

लघुविद्यानुवाद : दुर्लभ उपलब्धि

कुन्थुविजय ग्रन्थमाला समिति जौहरी वाजार जयपुर से प्रकाशित

'लघुविद्यानुवाद' ग्रन्थ यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र विद्या महोदधिका मन्थन रूप नवनीत है। इस सचित्र नयनाभिराम अपूर्व कृति मे भौतिकवाद और अध्यात्मवाद का मणिकाचन सयोग है। मानवजीवन के धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारो पुरुषार्थो की उपलब्धि के लिए भारतीय प्राचीन पोर्वात्य साहित्य मे, जो भी ऋषि परम्परा से प्राप्त अनुभवगम्य सामग्री थी, उसका सारभूत यह स्मरणीय-सग्रहणीय प्रकाशन अपने पाच खण्डो मे एक साथ उपस्थित कर चमत्कृत कर देता है।

आचार्य महावीरकीर्ति आध्यात्म, योग मत्र-ज्योतिष-आयुर्वेद के सागर थे, उन्ही के शिष्य परम्परा मे आचार्य गणधर कुन्थुसागरजी एव गणिनी आर्यिका रत्न विजयमति माताजी ने जो सग्रह प्रकाशित करवाया है वह स्तुत्य सारस्वत श्रद्धा सुमनाजलि प्रत्येक के लिए माग दर्शक है, इस ग्र थराज मे, श्रमण वैदिक एव आर्येतर भारतीय परम्परा के शब्द-ब्रह्म-ज्ञाता-ऋषिकल्प आचार्यो के अनुभव सिद्ध-दुर्लभ अनेक यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र तो एकत्रित हैं ही, अपितु उनकी सुबोध सरलभाष्य विधि भी साथ मे है।

चक्रेश्वरी, पद्मावती, ज्वालामालिनी, आदि शासन देवी-देवताओ के सुन्दर रगीन चित्र और मत्र महोदधि, मत्रमहार्णव, मत्र शास्त्र, आदि ग्रन्थो की उत्तम-प्रमाणित सामग्री भी इसमे एक साथ मिल जाती है। बीजाक्षर कोष का सक्षिप्तीकरण, स्वरूप-शब्द ब्रह्म-नाद के गुप्त रहस्य, एव तन्त्रो-यन्त्रो और मन्त्रो को इतना सरल, सुगम सामान्य भाषा मे, प्रस्तुतीकरण, जन सामान्य के लिए आज तक किसी ग्रथ मे एक साथ उपलब्ध नही था, मुद्रा-विधि, आसनो, मडलो के नक्शे, मुहूर्त साधन एव आसनो की विधि और उपाय-इक्कीस उत्तम चित्रो सहित प्रथम खण्ड मे ही है।

द्वितीय खण्ड मे पाच सौ आठ मन्त्र, अनेको कल्प गारुडी विद्याए, क्षेत्रपाल मन्त्र-यन्त्र साधन विधि विधान विस्तारपूर्वक है।

तृतीय खण्ड मे चौबीस तीर्थ कर, महालक्ष्मी सरस्वती, चौसठ योगिनी,

पचागुली, आदि के विस्तारपूर्वक सचित्र वर्णन है। इस खण्ड के अठ्ठारह चित्र सभी कठिन विषयो को व्यवहारिक और सिद्धयोग्य बना देते है।

चतुर्थ खण्ड मे दुर्लभ चौसठ यक्ष-यक्षणियो के चित्र, सोलह विद्यादेवियो का स्वरुप महिमा तथा होम, आहुति, वाचन, विधिका उत्तम निरुपण करता है। होम कुण्डो के नक्शे, मन्त्रो के स्वरुप, चित्र, बहुत ही स्पष्ट बडे टाइपो मे सुगम और सरल, सरस बोधगम्य शैली में है।

पंचम खण्ड मे नागार्जुन, पूज्यपाद, आचार्यों के सोने, चादी, पारा धातुओ के जारण, मारण, शुद्ध-सिद्ध प्रयोगो के सूत्र-नुस्खे, विज्ञान के अन्वेषी. प्रयोग प्रेमी छात्रो, प्राध्यापको और साधको के लिए बेजोड रिसर्च सामग्री देते है। एकाक्षी नारियल, गोरचन, वन्दा, बहेडा, हाथा जोडी कल्प और जडी-बूटियो के बडे सीधे सरल प्रयोग अनेक गृहस्थ और सामान्य जनो के लिए उपचार शाति-लाभ और धनवृद्धि की शास्त्रोक्त सामग्री देते है।

सात सौ पृष्ठो एव दुर्लभ रगीन चित्रो, म त्रो, यत्रो तथा अनेक कष्ट निवारक ऋद्धि सिद्धि दायक सामग्री का आकर्षक आवरण पृष्ठ व सुन्दर डिजाईन मे प्लास्टिक कवर के साथ यह प्रकाशन 1981 की ऐतिहासिक सपत्ति है। योग मत्र तत्र यत्र विद्या के प्रेमी, जिज्ञासु, सन्तो, गृहस्थो, विद्वानो छात्रो के लिए इस प्रकार का प्रकाशित ग्र थ भारतीय किसी भी भाषा मे पढने को नही मिला। यह सभी को सग्रहणीय है।

इस बहुरगी ग्र थ मे पूज्य आचार्य गणधर कुन्थुसागरजी एव गणिजी आर्यिकारत्न माताजी विजयमति को तपस्या का जीवत रूप दीखता है जो श्रावको, भक्तो, जिज्ञासु वात्सल्य प्रेम परम्परा को पावन विशुद्ध सारस्वत प्रसाद दे इस अलौकिक पारलौकिक धर्म मार्ग पर आरुढ करता है। प्रकाशन सयोजक द्वय श्री गगवाल शातिकुमारजी एव प्रवन्ध सम्पादक श्री लल्लूलालजी गोधाके इस अथक परिश्रम एव स्तुत्य कार्य के लिए जैन समाज द्वारा इनका अभिनन्दन आवश्यक है।

श्री अगरचन्द जी नाहटा, बीकानेर

श्री दि० जैन कुन्थु विजय ग्रन्थमाला समिति, जयपुर (राज०) ने आचार्य कुन्थुसागरजी व श्री गणिनी आर्यिका विजयमतिजी के सग्रहित लघु-विधानुवाद नामक एक वडा सजिल्द ग्रन्थ श्री शान्तिकुमार गगवाल व लल्लुलाल जैन (गोधा) ने प्रकाशन करवाया है। यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है यह ग्रन्थ 5 खण्डो मे विभक्त है। इसमे यत्र, मत्र, तत्र के अलग-अलग खण्ड है। आचार्य महावीर कीर्तिजी की सग्रहित सामग्री को इस मे व्यवस्थित रूप दिया गया है। बहुत ही थोडे समय मे इसका प्रकाशन करवाया गया है। ग्रन्थ के सग्रहकर्त्ता व प्रकाशक दोनो का ही यह प्रयत्न सराहनीय है। अपने विषय का अपने ढग का यह उल्लेखनीय ग्रन्थ है। समाज को इससे लाभ उठाना चाहिये।

श्री राजकुमार शास्त्री, निवाई

आपने लघुविद्यानुवाद ग्रन्थ मे जिस अदभुत साहस, अदभुत लगन एव प्रथक श्रम के साथ अपनी धार्मिक भावना का परिचय दिया है। इतने कम समय मे इतने महान् ग्रन्थ का जो प्रकाशन करवाया है यह स्तुत्य है। हमे आप जैसे युवक पर गर्व है। भगवान महावीर आपको सुख स्वास्थ्य समृद्धि प्रदान करते हुए चिरायु करे, यही कामना है।

श्री विमलप्रकाशजी जैन, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली

लघुविद्यनुवाद ग्रन्थ को आपने धर्मानुरागी जनो के लाभ के लिये और जनकल्याण की भावना से आपसी सहयोग से प्रकाशित किया है। यह जानकर हमे बहुत प्रसन्नता है। दिगम्बर साधुव्रतीजनो को यह ग्रन्थ आप नि शुल्क भेज रहे है। यह बहुत ही प्रसन्नता और पुण्य-लाभ का कार्य है।

श्री साहू श्रेयास प्रशाद जी जैन

लघुविद्यानुवाद ग्रन्थ की प्रति आपने मेरे स्वाध्याय के लिये भेजी है। उसके लिये मेरा धन्यवाद स्वीकार करे।

मुझे आशा है समाज इस ग्रन्थ की उपयोगिता को समझने का प्रयास करेगा।

श्रीमान् निर्मल कुमार जी सेठी

लघुविद्यानुवाद ग्रन्थ के प्रकाशन मे आपने जो योगदान दिया वो बहुत ही उत्तम कार्य किया है। आचार्य महाराज व माताजी अत्यन्त ज्ञानवान है। समाज को इस ग्रन्थ से बहुत ही लाभ मिलेगा।

श्री राजेन्द्र कुमार जैन खमरिया [मोजी], दमोह]म प्र]

मैने लधुविद्यानुवाद ग्रन्थ का अवलोकन किया यह महान कृति है।

मै प्रकाश चन्द प्रदीप कुमार जैन, शाहपुरा [म. प्रः]

आपका ग्रन्थ लघुविद्यानुवाद देखकर, सौभाग्य से बहुत प्रसन्न हूँ। आप लोगो के अकथनीय प्रयास से जैन मन्त्रो की इतनी बडी निधि छिपी पडी थी वह आज प्रकाश मे आई हे।

श्री पारस लाल पाटनी, तिलक नगर, जयपुर

श्री शातिकुमारजी गगवाल लघुविद्यानुवाद ग्रन्थ के प्रकाशन का कार्य आपके जीवन मे सबसे बडा कार्य था। इसको आपने जिस दृढता एव लगन पूर्वक सम्पन्न करके जो सफलता प्राप्त की है, वह जयपुर जैन समाज के लिये

ही नही वरन् सम्पूर्ण भारतवर्ष मे जब तक यह ग्रन्थ विद्यमान रहेगा आपकी कीर्ति लहराती रहेगी। भगवान आपकी धर्म की निष्ठा आत्मसाहस एव वैभव मे दिन दूनी रात चौगनी वृद्धि प्रदान करे, ऐसी मेरी हार्दिक भावना है।

श्री भूषण कुमार जैन बी.एस.सी., एल.एल.बी. एडवोकेट हिसार

लघुविद्यानुवाद ग्रन्थ का मैंने अवलोकन किया है। यह वास्तव मे बहुत अच्छा ग्रन्थ है।

हरिश चन्द्र ठोलिया
15, नवजीवन उपवन,
मोती डूंगरी रोड़, जयपुर-4

दिनाक २४-२-८१ को श्रवणवेलगोल चामुण्डराय मण्डप मे विमोचन समारोह के अवसर पर लिये गये चित्रो की झलक।
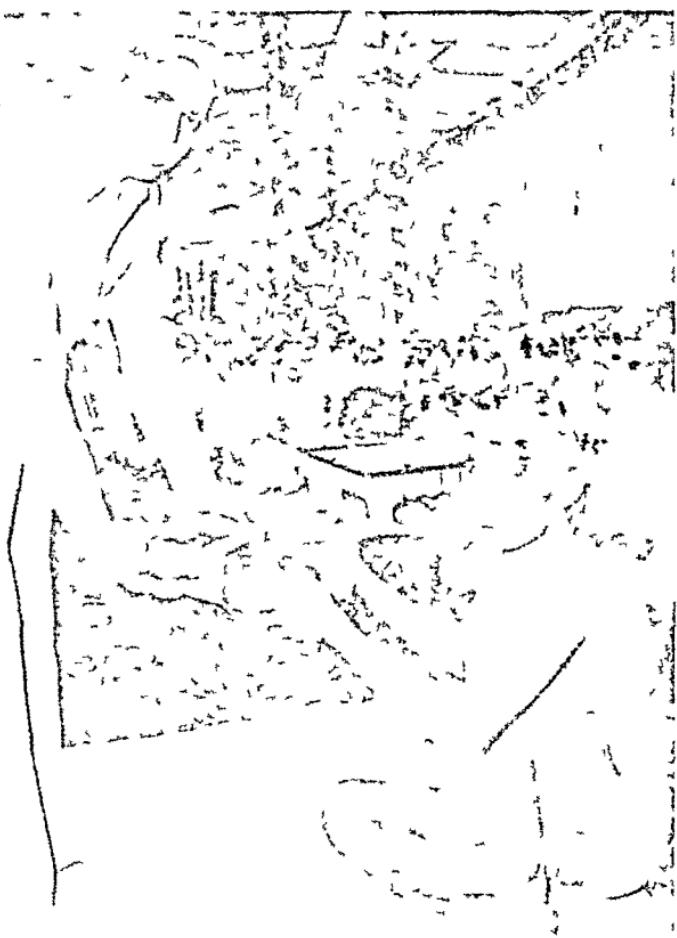
कुन्थु विजय ग्रथमाला समिति द्वारा प्रथम प्रकाशन "लघुविद्यानुवाद" ग्रथ की प्रथम प्रति सग्रहकर्त्ता श्री १०८ गणधराचार्य कुथुसागरजी महाराज को भेंट करते हुए प्रकाशन सयोजक शान्ति कुमार गगवाल

श्री १०८ आचार्य विमलसागरजी महाराज लघुविद्यानुवाद ग्रन्थ का विमोचन करते हुए।

चामुण्डराय मण्डप मे श्री १०८ गणधराचार्य कुंथुसागरजी महाराज ग्रथ की उपयोगिता के बारे मे प्रकाश डालते हुए
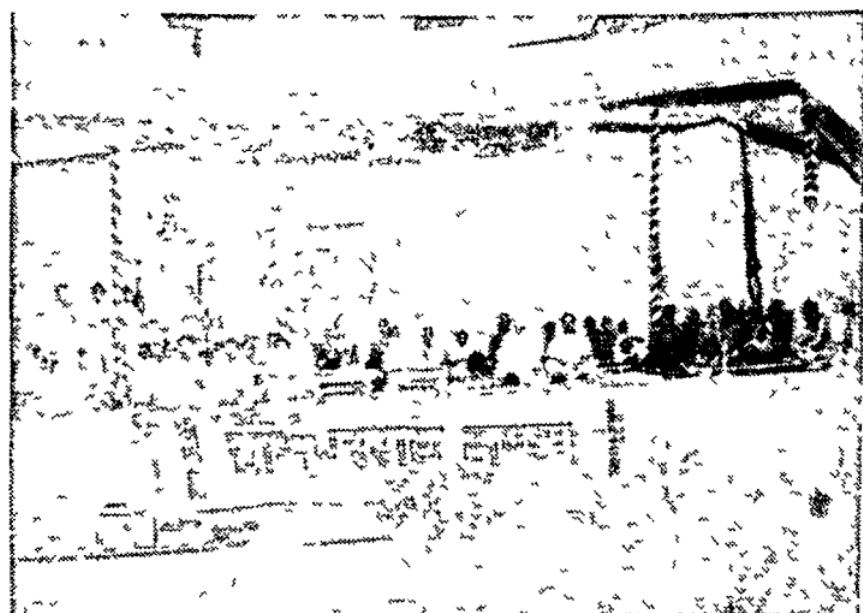
श्री गणिनी १०५ आर्यिका विजयमति माताजी को ग्रंथ भेंट करते हुए।

मच पर पूनमचन्दजी गगवारा झरिया वाले एव त्रिलोकचन्दजी कोठ्यारी बैठे हुए।

श्री पट्टाचार्य लक्ष्मीसेन भट्टारक स्वामीजी महाराज को

बहिन श्रीमति कनक प्रभाजी हाडा समारोह मे आध्यात्मिक भक्ति सगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए।
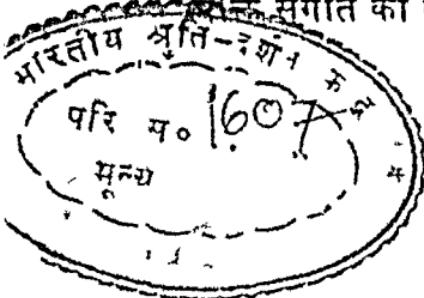
चामुण्डराय मण्डप मे उपस्थित जनसमुदाय